मूल्य रु. ५-००
Shree Swaminarayan (Gujarati Monthaly)

श्री स्वामिनारायण

मासिक
प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख
पूर्ण अंक २०२ मई -२०२४

रामनवमी, श्रीहरि जयंती समैयो

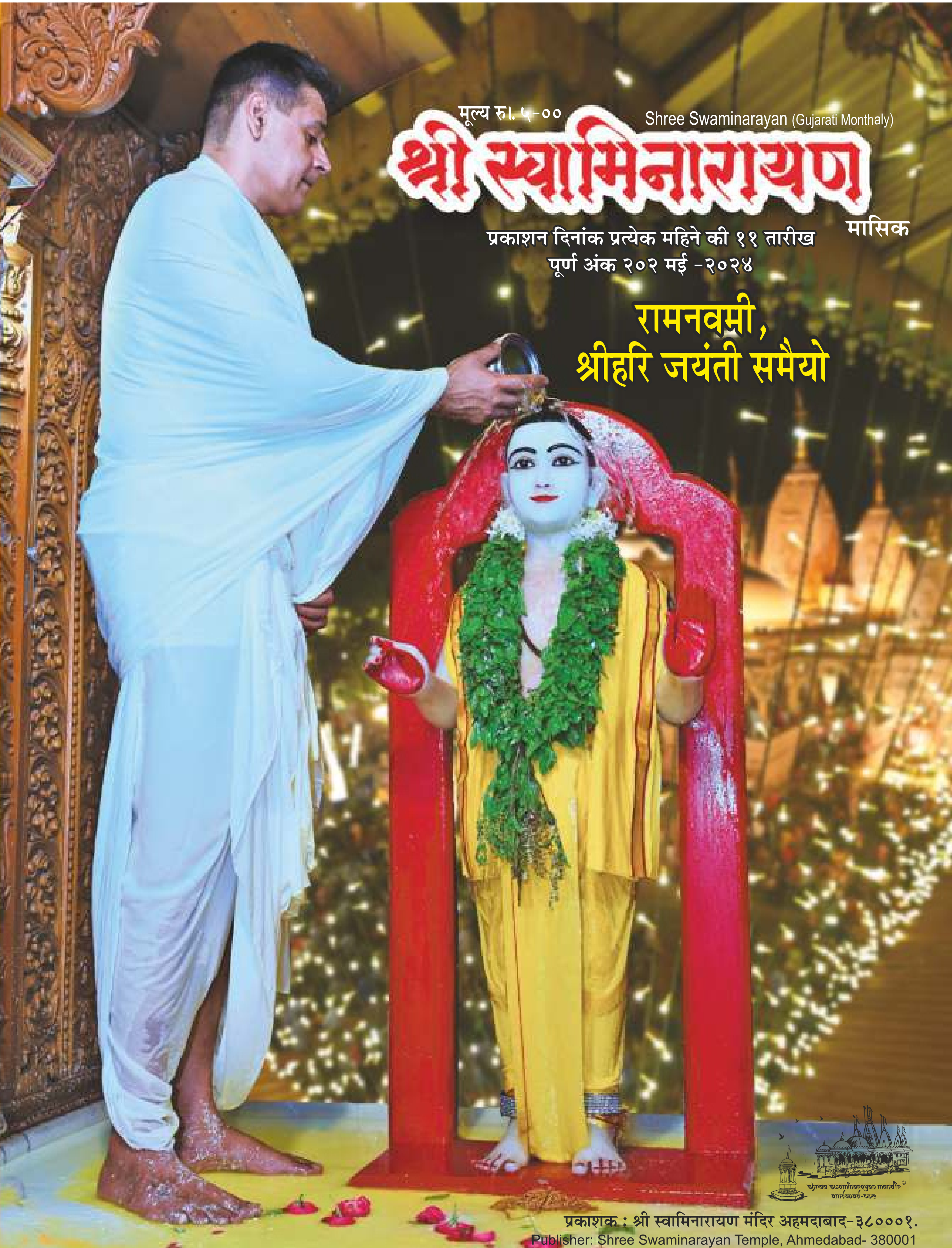

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.
Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

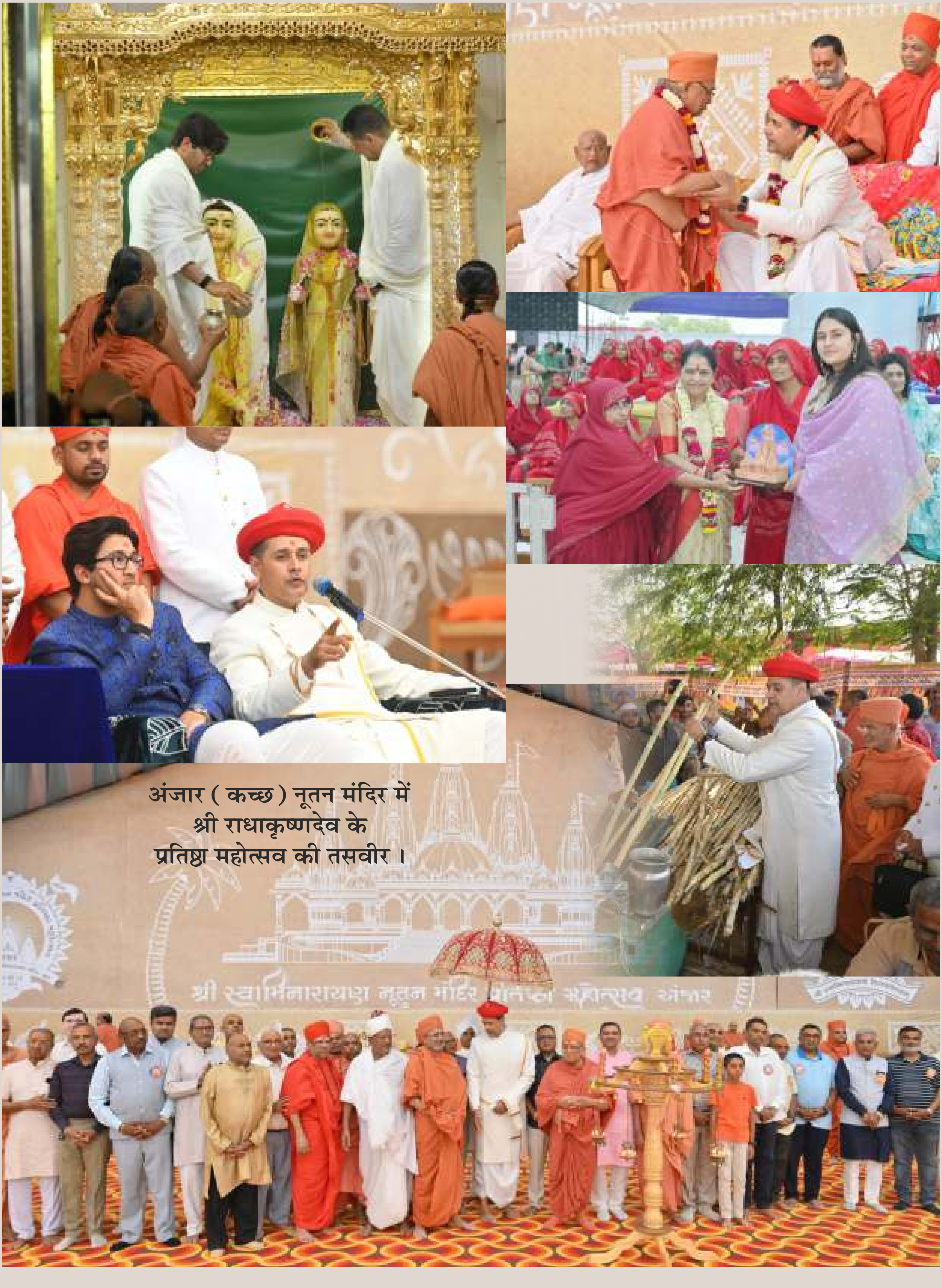

अंजार (कच्छ) नूतन मंदिर में
श्री राधाकृष्णदेव के
प्रतिष्ठा महोत्सव की तसवीर ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १७ ● अंक : २०२ ● मई-२०२४

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. १०८ और १००८ ०६

०४. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वचन ०७

०५. सम्पत्ति – दान, भोग और नाश १२

०६. ''निंदा का फल'' १३

०७. भगवद् – निष्ठा अनिवार्य १४

०८. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १९

०९. भक्ति सुधा २०

१०. सत्संग समाचार २४

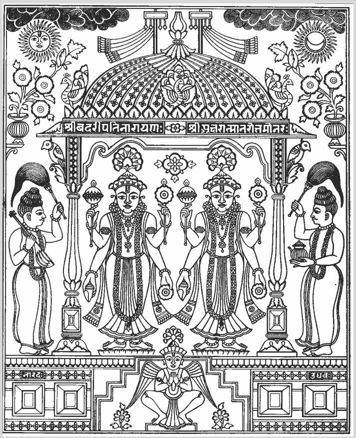

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

प्रिय हरिभक्तो, हम सभी लोग सत्संगी है। प्रतिदिन शिक्षापत्री वचनामृत पढते है। आप को ऐसा लगता होगा कि हम कितने अच्छे भक्त है। कितनी बार शिक्षापत्री पढ चुके है। काफी कुछ वचनामृत मौखिक याद है। केवल पढना हो महत्वपूर्ण नही है। पढकर विचार करना यह महत्वपूर्ण है। विचारकर जीवन में क्या प्रयोग में लाना है। और क्या छोड देना है। यह महत्वपूर्ण होता है।

महाराज के कितने आदेशो का पालन करते है। इस पर विचार करना है। आज्ञा का धीरे-धीरेप ालन करे। ऐसा बनना है। महाराज के महात्मय को कितना समझे है। बात करना तो आप को और हमे अधिक आता है। लेकिन व्यवहार में लाना महत्वपूर्ण है। व्यवहार में आये तभी हमारे जीवन में महाराज का कितना महत्व है। और संसार का कितना महत्व है ?

श्रीजी महाराज की हमारे उपर कितनी कृपा है। ज्ञात है ? प्रतिक्षण अपनी रक्षा करते है। शेष अपने हाथ में न जन्म निश्चित है नही मृत्यु निश्चित है। फिर भी अपना-अपना बोलकर मर जाते है। बंगला बनवाना, इतनी सम्पत्ति बनाई। मैने शून्य से प्रारम्भ करके इतने संकलनकर लिये। लेकिन। सब कुछ छोडकर जाना पडता है। कुछ साथ नही जाता है। लेकिन ममता जाती नही है।

छोटे बच्चे को आप मिठाई या खिलौना दे। फिर उससे वापस माँगे तो वह नही देगा। कहेगा, यह तो मेरा है। हम भी इसी तरह से करते है। सब कुछ देव का दिया हुआ है। लेकिन शिक्षापत्री के अनुसार धर्मादा देने पर कहते है कि यह हमने बनाया है। देव को क्यो दूँ ? यह जीव का स्वभाव होता है। लेकिनअपना कुछ भी नही है। सब कुछ देव का है। तुम्हे कब जाना है ज्ञात है ? यह देव के हाथ में है। हम सभी निमित्त मात्र है। हमे देव का बनकर रहना है। सबकुछ उन्ही का है। हमारा कुछ भी नही है। यह केवल बोलने के लिये नही है। इसको प्रभावी करना पडता है। जय श्री स्वामिनारायण।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (अप्रैल-२०२४)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर नटवरगढ (मूली प्रदेश) विशाब्दी (२० वाँ पाटोत्सव) महोत्सव के अवसर पर पधारना।

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर १९८ वाँ पाटोत्सव के अवसर पर पधारना। देव सरोवर के आधुनिकरण नवीनीकरण का अपने करमकलो द्वारा उद्‌घाटन करना।

३ काशीन्द्रा गाँव मे श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव पर पधारना।

६ अलीणा गाँव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर (ता. कपडवंज) में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

७-८ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटा (राज.) प्रथम पाटोत्सव पर पधारना।

९-१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजार (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

१७ श्री रामनवमी श्रीहरि जयंती समैया के अवसर अक्षरभुवन में बालस्वरूप घनश्याम महाराज के पाटोत्सव के अवसर पर षोडशोपचार अभिषेक, १२ घंटे की अखंड धून में पधारना।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर छत्रीयाला (मूली प्रदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर एकादशी दर्शन के लिये पधारना।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम के सत्संग सभा के अवसर पर पधारना।

२९-३० भुज-कच्छ, वेकरा-कच्छ और सुरजपर-कच्छ पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (अप्रैल-२०२४)

२ ओस्ट्रेलीया सत्संग प्रचार करके स्वदेश आना।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा के पाटोत्सव मे पधारना।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर महापूजा के अवसर पर पधराना।

१०-११, १३-१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजार (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा पर पधारना।

१७ श्री रामनवमी श्रीहरि जयंती समैया के अवसर पर आयोजीत कीर्तन भक्ति और रात्रि १०-१० श्रीहरि प्रागट्योत्सव के अवसर पर आरती स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण किये थे।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल कथा के अवसर पर पधारना।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम की सत्संग सभा में पधारना।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (खाखरीया) कथा के अवसर पर पधारना।

१०८ और १००८

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास
(जेतलपुरधाम)

१०८ मणका पूरे ब्रह्मांड की रचना का द्योतक है। सभी धर्म, सम्प्रदाय, पंथ, अखाडे, विश्व के सभी देशो के भाँति-भाँति प्रकार के धार्मिक विचारधारा में गणना में एक समानता है।

अपने भारतीय सनातन भूगोल विज्ञान में १०८ का अंक अधिक प्रसिद्ध है। जप, तप, पाठ, पढन, पुरश्चरण में १०८ की गणना हमारे ऋषि-मुनि लाये है। इसमें माला में १०८ मणका से लेकर उपनिषदो की संख्या तक उसमें प्रत्यक्ष या सूक्ष्मरुप में १०८ की गणना सिद्ध हुई दिखाई देती है। १०८ अंक का विज्ञान कई रुप में दिखाई देता है। इसमें तो सर्वप्रथम कारण तो ब्रह्मांड के सात आरबिट अर्थात् आवरण, इसका योग जोडा गया है। उसकी रचना देखे तो **सूर्य के चारो तरफ धुमते नव ग्रह** – सूर्य, चंद्र, मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र शनि, केतु, राहूँ तत्पश्चात भ्रमण करते बारह राशियो का आवरण है। **राशि** – मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन इसके बाद इसका चक्कर बारह **आदित्य** के आवरण है। जो विवस्वान, आर्यमान, त्वल्टा, सवित्र, भग, घाता, मित्र, वरुण, अम्सा, पूषन, इन्द्र, विष्णु। तथा इसके बाद धुमने वाले ग्यारह **रुद्र** का आवरण है। जो कपाली, पिंगल, भीम, वीरुपाक्ष, विलोठित, शास्ता, अजपाद, अर्हषुन्य, शंभु, चंद्र भव। इसके पश्चात **नक्षत्रो** के आवरण है। जो अश्विनी, भरणी, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उथ्तर फाल्गुनी, स्वाति, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढा, उत्तरषाढा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपक्ष, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराभाद्रपक्ष और रेवती के आवरण है। इसके बाद **२८ निहारिका** का आवरण है। जो आकाश गंगा के रुप में ताराओ के रुप में बादल स्वरुप मैं है। इसके बाद **आठ वस्तुओ** का आवरण आता है। जैसा कि घर, ध्रुव, सोम, आप, अनल, अनिल, प्रत्यूष, प्रभास आते है। जोडे तो ९ +१२ १२ ११ २८ २८ + ८ कुल अंक १०८ हो जाते है। पूरे ब्रह्मांड की परिकल्पना में उपरोक्त शक्तियो द्वारा संचालित होती है। इसके बाद १०८ का अंक अन्य कई कारण से जुडा है। जैसे की धरती से सूर्य की दूरी से १०८ गुणा दूर है। धरती से चंन्द्र की दूरी चन्द्रग्रह की कुल लम्बाई के १०८ गुनी है। अर्थात् ग्रह की चौडाई उतनी ही १०८ गुना पृथ्वी से दूर है। इसके बाद मनुष्य के शरीर में १०८ चत्र अर्थात् मर्मबिन्दू मिलते है। जिस बिंदु की एक्युप्रेशर देकर कर रोगी को लाभ दिया जाता है। संस्कृत भाषा में ५४ अक्षर है। उसके दो-दो पाद आते है। एक पुरुष एकस्त्री उसका योग करने पर १०८ संख्या बनती है। १०८ शक्तियाँ-विभूतियाँ मृत्यु लोक के मानव पर सीधा सम्बन्ध रखते है। १०८ की स्थिति मनुष्य के जीवन में प्रभाव पाकर उसे लाभ, हानि, सुख, दुख, हर्ष, शोक, उद्वेग, पतन का कारण बनती है। जैसी १०८ की रचना ब्रह्मांड में है। वह सूक्ष्म रुप से मानव शरीर मे भी है। बुद्ध धर्म में १०८ सीढीयाँ चढने की परम्परा में रहस्य ही है।

अब १००८ का अंक कैसे बना उसका विज्ञान देखे। तो पूरे ब्रह्मांड में कुल ९०० (नवसौ) लक्षण और ब्रह्मांड के १०८ आवरण दोनो का योग करने पर तो १००८ आता है। अर्थात् भारतीय धार्मिक परम्परा में किसी पंथ, सम्प्रदाय के आचार्य (अध्यश्री) को १००८ के पद से जानते है। आज भी कुम्भ मेले में ऐसे योग्य सम्प्रदाय के आचार्यो को अखिल भारतीय अखाडा परिषद द्वारा १००८ की पदवी प्रदान किया जाता है। अपने सम्प्रदाय के पूर्वाचार्य प.पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को १००८ का पद दिया गया था। उसी परम्परा के अन्तर्गत जो गादीपति होता है। उसके आगे १००८ लिखा जाता है। यह कोई कल्पना नही है। बल्कि शास्त्र सम्मत विशेषण लिखा जाता है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा
मंदिर दैनिक दर्शन तथा मंदिर में होने
वाले प्रोग्राम के लिये
सम्पर्क : ७०४६७१२०००

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

अंजार नूतन मंदिर महोत्सव (प.पू. बड़े महाराजश्री के ८० वे प्रागट्योत्सव के अवसर पर) दि. ११-४-२०२४ : एक आचार्य के रुप में ही नही बल्कि एक बेटे के रुप में मैं आज बात कर सकता हूँ। ८० वर्ष तो ठीक है। ८० क्षण भी किसी का तथा बापजी का कैसे व्यतीत होता है। मैं बचपन से देख रहा हूँ। क्योकि मैं बालपन से साथ रह रहा हूँ। कई लोग हमारी बात करते है। उन्हे गम्भरीता से बता रहा हूँ। जो भी कुछ हम दोनो में (प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री) इस देव के प्रति निष्ठा और सिद्धान्त जो आया है। उसके कारण आप (प.पू. बड़े महाराजश्री) का सहरा है। सत्य बता रहा हूँ। आज भी बापुजी वासुदेवप्रसादजी दादा सभी आचार्यो की बात सम्प्रदाय के बडे संत और हरिभ्कतो की बाते सुनते रहते है। जो कुछ प्राप्त होता है उसे हृदयमें रख लेते है। यह हमारी धरोहर है। जो कुछ भी सीखा हूँ। कुछ भी शास्त्र में से नही सीखे है। बापजी का जीवन देख कर सीखे है। बाद में शास्त्र आया है। क्योकि मार्गदर्शन के लिये बड़ो का सहारा होना चाहिए। होना ही चाहिए। इसमें कोई अतिशयोक्ति नही है। पूरा सम्प्रदाय ३६० दिन हुआ है तो उसके पीछे के कारण बाप जी है। (प.पू. बड़े महाराजश्री) से पहचान मिली है। कुछ लोग कहते होगे कि मैं कडक हूँ। मैं सिद्धान्त में छूट नही रखता हूँ। जैसा रुपया होता है वैसा ही फुटकर निकलता है। बापजीने जो संस्कार दिये है। इससे मेरा तथा आप सभी का अस्तित्व बना है।

१९८१ में द्विशताब्दी उससे पहले दो वर्ष अर्थात् १९७९ से लेकर गाँव में धुमना शुरु किये। आप देखे १९८० के बाद पूरे सम्प्रदाय में प्रगति का ग्राफ सीधे बढा है। कोई भी शाखा हो। या मूल सम्प्रदाय हो, अगल बगल वाले हो शेष योग जागृति आई है। तो उसके कारण बापजी गाँव-गाँव घुमे है। शब्दो में वर्णन करना कठिन है। जो मैं अपने शब्दो में बताउ तो आचार्य के लिये गृहस्थाश्रम, त्यागाश्रम, सम्प्रदाय की सम्भालना, शेष खुश रहना। इन सब बातो को संतुलित रखना तथा मार्गदर्शन कोई शास्त्र दे नही सकता है। जगत में प्रसिद्ध है।और शास्त्र में लिखा है। मनुष्य को गुरु बनाना पडता है। महाराजने भी गुरु बनाया है। प्राचीन से प्राचीन ग्रंथ पढे बिना गुरु के कल्याण होने वाला नही है। गुरु मार्गदर्शक होता है। दृष्टा होता है। जो आप को दर्शन करा सकता है। मार्ग बताता है। सिद्धान्त और परम्परा बता सकता है। गर्व है कि ऐसे पुरुष का सहारा मुझे, लालजी महाराजश्री और हम सभी को मिले है।

भगवान की असीम कृपा है। करुणा है, संतो का स्नेह है। आज देव का बनकर रहने का ज्ञान जो आया है। और यह पगडी (साफा) नरनारायणदेव के आगे) ही उतरती है। दूसरी जगह नही उतरती है। इसके कारण (प.पू. बड़े महाराजश्री) है। ये मुझे कभी बोले नही। किसी दिन रोके टोके भी नही। लेकिन सत्य यह है कि निरीक्षण करके मैं जीवन जीना सीखा हूँ। ८० वर्ष तो साइट में रहा। ८० घंटे हमारा जीवन आप व्यतीत करले तोँ अपनी पगडी रख कर चल दूँ। अधिक कठिन है। सभी ज्ञान बापजीने दिया है। आप आप नही। आप भगवान हो।

वचनामृत में अयोध्याप्रसादजी दादाने प्रश्न किये है कि सम्प्रदाय में आचार्य के रुप में बडाई किसे है ? आगे कौन बढेगा ? भगवान की प्राप्ति कैसे होगी ? मेरे शब्दो में कहूँ तो आचार्य को गृहस्थ आश्रम देखना है। यह सत्संग तथा संत-हरिभक्तो को सम्भालना। दो फोन नही उठाने पर गाली सुना यह कैसे ? तभी महाराजने एक वाक्य में उत्तर दिये कि जो सहन करे वह बडा बनेगा। यह बडी बात है। बात करने से कोई लाभ नही है। **Meaning** शब्दो से वर्णन नही कर सकेत है।

पूरे सम्प्रदाय के उत्थान के रुप में उत्तर विभाग, दक्षिण विभाग, और कुछ जो शेष आते है। उन जगहो की उर्ध्वगति हुई है। उसके पीछे का हाथ बापजी का है। यह लिखकर देता हूँ। प्रारम्भ इनसे ही हुआ है। धर्मनंदन स्वामी तथा बड़े संत इसके साक्षी है। इस चौविसी में अपनी स्थिति कैसी थी। किस प्रकारका जीवन व्यतीत कर रहे थे। सिर पर रुमाल बांधकर मैं बापजी के साथ आता था। ८ से १० घंटे की यात्रा के बाद भचाऊ में नारियल पानी पीते थे। ए.सी. वाला साधन नही था। संघर्ष जो सभी ने किया है। लोग विलाप करते है। ऐसा लगता है कि। गर्व है कि मुझे ऐसे बाप (प.पू. बड़े महाराजश्री) मिले है। नरनारायणदेव मिले है। इस लिये छाती चौडा करके चलता हूँ और चलुगा भी। ऐसा बाप और परिवार मिला है। बच्चे-बच्चियाँ, गादीवाला तथा बहनो का भी योगदान मिला है। आचार्य की पत्नी होना साधारण बात नही है ? संत हूफ है, मजाक करत जाते है। ये देवप्रकाश स्वामी, देवचरण स्वामी, तथा कृष्णस्वरुप स्वामी अच्छी बात करते है। सनातन स्वामी से लेकर धर्मनंदन स्वामी तक तथा अन्य संत, अहमदाबाद के महंत पी.पी. स्वामी, बड़े पी.पी. स्वामी है। आप सभी का लगाव है। इस लिये कार्य पूर्ण होता है।

संत और हरिभक्त मिलकर रहते है। और रहने वाले भी है। यदि अलग हुए तो समाप्त हो जायेगे। यह बात सत्य है। शेष आनंद करे। लड्डू खाये। बापजी लड्डू खिलाया। मैं तो खाता नही फिर भी आज आधा खाया है। ८० किलो लड्डू का केक बना है। कोलेस्टेराल का ध्यान रखे। रक्त चाप ये सब वारसागत में मिलता है। इन सभी को सम्भालना पडता है।

देवप्रकाश स्वामी का फोन आया था। महंत स्वामी और जादवजी भगत ने बर्थडे मनाने के लिये विनय किये थे। बापजी तो मनाकर दिये थे। नही मनाना है। मैने कहाँ आप के हरिभक्त खुश हो जायेगे। आज हम किसी को क्या दे सकते है ? हजार करोड इकड्डा है, उपर लेकर जायेगे।

मैं स्थायी रूप से कहता हूँ कि दिवाल पर टग जाने से अच्छा है कि लोगो के हृदय में टग जाये। तो जीवन सार्थक हो जायेगा। यह वास्तविकता है। कैमरा वाले आप अपना कार्य करे। मैं विरोध नही कर रहा हूँ। लेकिन क्षण को पकडना है। जो क्षण गया वह आता नही है। जीवन में जो कुछ मिला है। उसकी खुशी रखे। महाराजने अपनी पात्रता से अधिक दिये है। महाराज कितने दयालु है। यह गद्दा तकिया। गलईया चद्दर गाडी सब कुछ भगवान की देन है। आप के उत्साह और उमंग से आनंद आया। बापजीने हा कहा और समय दिये। बापजी को धन्यवाद। बापजी से जब नही किया जा सकता है। मैं ही नही करता। कभी कभी हमारे उपर डाल देते है। समय सूचकता उम्र **Observation** इस सभी का मिश्रण करके **Genius** (बुद्धिशक्ति) उनके ये है। तूफानी भी इतने ही है। साथ में रहे तो ज्ञात होगा। इस लिये परचूरण भी वैसा ही आयेगा। सब सही लेकिन कम नही होगा।

प्रार्थना करे दूसरा कुछ तो नही ऐसा ही देव का सहारा शक्ति मिले। जीवन का अर्थ मिलता है। जीवन की **Meaning** (भावार्थ) मिलता है। आप का स्वास्थय अच्छा है। और अच्छा रहेगा। भगवान खुश रखे। हरिभक्तो का अभिंदन आप सभी इस उत्सव में आये है। दूसरे उत्स वमें भी आये। यह अपना परिवार है। इसी रुप में रहना है। जय स्वामिनारायण (यहाँ पर उलेखनीय है कि प.पू. बड़े महाराजश्री के इस जन्म उत्सव पर जो कुछ भेट दिये है। ये सब भेट तुरंत छपैया श्री घनश्याम महाराज को अर्पित कर दिये थे।)

ता. ११-०४-२०२४ अंजार में एक नया इतिहास बना है। घनश्याम महराज के साथ साथ राधाकृष्णदेव विराजमान हुए है। इस क्षेत्र के हरिभक्तो की भाग्य है कि बडे से बड़ा मंदिर भुज मंदिर के अर्न्तगत सुंदर कार्य किया गया। आनंद की बात है। गाँव गाँव से हरिभक्त एकत्र हुए है। सभी को हार पहनाया।

विसुद्ध ह्रदय से जो अन्तिम पंक्ति में बैठे है । उन्हे ह्रदय पू र्वक हार पहना रहा हूँ । तपस्वी तथा रसोई में जो लोग कार्य करते है । हमे तो हवा मिल रही है । कुरजी ! हमे तो ए.सी. भी मिली है । ठंड लगने के कारण उसे बंद किये है । सबसे बड़ी बात यह है कि जो काम कर रहे है । आसान नही है । इतने दि सब कुछ छोडकर भगवान के लिये यह संत और अग्रणी हरिभक्त, समिति के सदस्य वे दिन-रात दौडकर स्वयं सेवक सेवा कर रहे है । पटाखे हो या डेकोरेशन, हम लोग देखकर खुश होते है । लेकिन इसका प्रबन्ध होता है । सभी को अधिक धन्यवाद । महाराज से प्रार्थना करते है कि संत-हरिभक्तो को आशीर्वाद प्रदान करे ।

प्रातः अच्छे से अभिषेक, देव का, अन्नकूट दर्शन किया एक महत्वपूर्ण बात कह रहा हूँ । एक ही बात करेगे । सभी लोग समझ जायेगे । मेरी गाडी डीजल भरवाने गयी थी । गल्ला या कही अन्य जगह पर ले गया । ड्राईवर को मुक्त कर दिया । क्यो कि ? यह गाडी मेरी नही । नरनारायणदेव का चेक दिया गया है । मै रहता हूँ वह घर देव का है । मेरा नही **President House** है । मेरा कपडा देव का है । खून देव का है । श्वास देव की है । इस गाडी का सम्बन्ध हमसे होता है । रविभाई की, धनजीभाई की, रामजी बाबा की शियाणी बापा की गाडी खडी रहने पर लोग कहते है । यह उनकी कार है । हमारी गाडी गल्लेप र खडी रहे तो क्या ? यह बात महाराजश्री तक जाती है । वहाँ से सम्प्रदाय तक जायेगी । अन्ततः स्वामिनारायण भगवान तक जायेगी । इसके बाद अळग होगी । यह बात महाराजने कहा है । कि कीडीयारारोग अंगुली में हो जाने पर वह भाग काट दिया जाता है । यह साधारण सी बात है । सम्प्रदाय के उपर लांछन आये तो उस काम को हटा देना चाहिए । इसमें शर्म नही करनी चाहिए ।

हमने अपनी बात बताया है । बीते दिन यही बात हरिभक्तो के मध्य कहे थे । कोई व्यक्ति तिलक-चाँदला करके हाथ में बीडी-सीगारेट लेकर खडा हो वहाँ पर आप खडे नही रहिए । आप अपने सम्प्रदाय को खडा रखते है । या वह चौविसी का हो या अहमदाबाद या वडताल की तरफ का रहे । या अन्य कोई भी व्यक्ति हो । कोई भी व्यक्ति हो । भजिया की लारी के पास खडा रहना तो वह सम्प्रदाय को भजिया के लारी पर ही रखता है । इस लिये कह रहा हूँ । हमारे पैर हमेशा संज्ञानित अवस्था में रखना चाहिए । यह मेरी तथा आप की बात नही है । हम सब की बात है । सत्य बात है कि नही घर पर जाकर अवश्य विचार करियेगा । यह मेरा मानना है । आज्ञा नही दे रहा हूँ । सुझाव है ।मै जो मानता हूएँ । वही बता रहा हूँ ।

कंठी पहरनकर मंत्र ले लिये । इतने से पूर्ण नही होता है । यही से सब कुछ शुरु होता है । अब आप को सावधान रहना पडेगा । कहाँ पर पैर रखे । यह जिम्मेदारी की बात है । आप के प्रत्येक कदम का अवलोकन समाज करेगा । इस लिये सोचकर कंठी पहने । विचार करके मंत्र ले । पालन नही करना हो तो मत ले । लांछन स्वरुप तो नही रहेगा । जीवन में कुछ चीजे गम्भीरता से लेना चाहिए । महाराज शिक्षापत्री के लिये कहे है । दैवी सम्प्रदायवाले को ही दे । आसुरी वृत्ति वाले को नही देना चाहिए । यह वस्तु **Important** है । शियाणी बारा सम्भालिये । **Serious note** हम सभी के उपर बडी जिम्मेदारी है । सम्प्रदाय हम सभी का है । हम सभी सम्प्रदाय के है । हमे व्यक्तिगत नैतिक जिम्मेदारी लेना होगा । महाराजश्री की जिम्मेदारी है कि धर्मनंदन स्वामी का या अमुक संत की जिम्मेदारी है । यह बोलकर छूट नही सकते है । **We have to stand** हमे खडा रहना है ।

सत्य बात के लिये हमे अपने सिद्धान्त को छोडना नही चाहिए । परम्परा भी नही छोडना चाहिए । मुझे गर्व है महंत स्वामी के लिये । इन्होने जन्म दिवस के लिये नही कहा । फिर बोले संतो का जन्म दिन नही होता है । दीक्षा प्राप्त करे । अर्थात् द्वैत माना जाता है । ब्राह्मण जनेऊ धारण करता है द्वैत कहा जाता है । वही से दूसरा जन्म माना जाता है । महंत स्वामी तो बड़े है । अधिक कार्य किये है । परिश्रम किये है । किसी को संतो

के प्रति ईर्ष्या हो । दूसरे तथा हमारे में क्या अंतर होगा ? महंत स्वामी धन्यवाद आप को **Seriously** ऐसा दूबारा मत करियेगा । ऐसा कौन कह सकता है । वह जो महाराज को जानता हो । ''तो इन्होने मर्यादा का उल्लंघन नही किये है । इस लिये वे महंत है । नही तो आज हमे महंत स्वामी को सिंहासनप र बैठाना पडेगा । यह बात महंतजी के लिये नही कर रहा हूँ यह एक रुपक है । इतना अंतर है । मूल सम्प्रदाय में, आचार्य पद अच्छाहै । बापजी के प्रति लगाव हो । भुज मंदिर उपर नरनारायणदेव देश गद्दी उपर आँच नही आये । यह हम सभी की जिम्मेदारी है । सिद्धान्त के लिये खडे होने वाली बात है । सिद्धान्त-परम्परा सुरक्षित रखने पर महाराज खुश होगे । यह महाराज के वचन है।

शिक्षापत्री में आज्ञा किये है । ''सत्संगिजीवन धर्मशास्त्र है । पढे तो अच्छा लगेगा । यहि सही कहे तो इसमें से ९९% कंठी छोडकर चले जायेगे । इसलिये पोथी बाँधकर रखते है । श्रीजी स्वामी ! कोई पेज निकालकर देखे । खोले तो आप नही । मह भी चले जाये । मनजीभाई ! मैं आप की प्रशंसा करता हूँ । आप मेरी प्रसंशा करे । दुनिया ऐसे चलती है । ऐसा हमे नही करना है । हार-तोरण अधिक हुआ । शोभायात्रा अधिक की गयी । अब बंद हो गयी है । अब वरघोडा निकलता है । अब हम लोगो को भगवान के कार्य करने का समय आ गया है । जितनी अपनी शक्ति है । या वह पैसा हो, मैन पावर हो, मैनेजमेन्ट हो, माईक्रो मैनेजमेन्ट हो उसका उपयोग सकारात्मक रुप से करना है । बड़े संत बैठे है । उनके मार्ग दर्शन में युवा संत कथा-वार्ता करे । कुछ भी सेवा करे । उससे सत्संग का पोषण होना चाहिए । हम सभी अपनी शक्ति का उपयोग भगवान को जानने के लिये करे । ऐसा करने पर लडके और लडकियाँ भी करेगी । मानवता का कार्य करने पर बच्चे भी मानवता पूर्ण कार्य करेगे । मानवता के उपर ही यह सम्प्रदाय खडा है । महाराज ने किसी को सीधे कंठी नही पहनाया न तो शिक्षापत्री दिये । किस साल में शिक्षापत्री लिखी गयी है । पढले । इससे पूर्व महाराज कुवाँ, वाव, तालाब खुदवाये थे । कोई ने दु:खियो रे, देखी न खमाय, दया आणी रे, अति आकला थाय... अन्न धन वस्त् रे, आपी ने दु:ख टाले, करुणादृष्टि...रे, देखी वानज वाणे... ऐसे महाराज थे । ये महाराज है।

हमे अपनी तरफ देखना है । भगवान का दर्शन करने के पश्चात स्वयं का दर्शन करना चाहिए । उपदेश नही दे रहा हूँ । भाषण देने नही आता है । मन में जो आता है कह देता हूँ । स्वभाव से कोई पर नही होता है । वचनामृत में श्रीजी महाराज के वचन है कि ''भगवान के भक्तो को आपस में ईर्ष्या नही रखनी चाहिए ।'' आनंदानंद स्वामी कहते है कि हे महाराज ! ईर्ष्या तो होती ही है ।'' फूल स्टाप-ऐसे बड़े संत स्वीकार करते है । और हम कहते है कि अखंड मूर्ति का ध्यान करे । अधिक सुख मिलता है । झूठा हम क्यो बोलते है ? माने बापा । **Transparency** (पारदर्शकता) रखे ।

हम सभी को लक्ष्य यह रखना है कि अपनी संस्था कैसे आगे आये । संत-हरिभक्तो को किस प्रकार की सुविधा प्रदान करे । यह एक प्रबन्ध का हिस्सा है ।और यह भगवान का कार्य है । देव की महिमा कम नही होनी चाहिए । कही पर आँच नही आना चाहिए । कोई भी कार्य यदि भगवान का है तो हम सभी संत, ट्रस्टी कैसे सहयोग कर सकते है । यह देखना है । रामजी बापा **First Class** कोटी पहन कर अच्छे लग रहे है । अब हार फूल बंद करे । पीछे बैठे लोग भी लाभ पाये । इन बहनो को तो हार पहनाते नही जो आकर सर्व प्रथण बैठ जाती है । हम सभी गाम चर्चा में निकलते है । वहाँ पर बहनो का स्वागत होता होगा । लेकिन हमारे यहाँ बहनो का स्वागत कोई नही करता है । फिर भी वाजिंत्र वाले के आने से पहले बहने आ जाती है । इजरायल की क्या स्थिति है । वह देखने के लिये गाँव में धुमते है । देवो के लिये हार-तोरण बनाती है । मंदिर की गलियाँ साफ करती है । उनको हार पहनाओ । कुछ का नाम बोले तो ऐसा लगता है कि यहाँ से भाग जाये । अपनी प्रणालिका बराबर है । कुछ यजमान सीमित होते है । अतिशयोक्ति के कारण लोग

दुःखी जाते है। यह बहुत **Strait to the point** की बात है। अंत में कितने लोग रहते है। सबको ज्ञात है। आप को भी ज्ञात है। हम यहां पर बैठे रहते है। महाराज के समय कही सुनने को मिलता है कि दादा खाचर के दरबार में सभा लगी थी। महाराज गुलाब का हार पहने थे। मुक्तानंद स्वामीने प्रश्न पूछा इसके बाद किसी गाँव का हरिभक्त आकर महाराज को हार पहनाया था। जाये तो जाये कहाँ। आते ही नही। खुश होकर चरणारविंद का वंदन किया।

हमे अपने मूल पर जाना ही होगा नही तो १ घंटा ४० मि. होगा ही। धनजीभाई। मन-मन में ही हँस लीजीये। आप देखे आज समय की कीमत है। सब प्राप्त होगा। समय नही मिलेगा। समय का उपयोग होना चाहिए। घडी की सूई पीछे नही धुमती है। संस्था की सम्प्रदाय की उन्नति तथा सामाजिक उत्थानके लिये संपूर्ण उपयोग होना चाहिए।

अच्छा उत्सव मनाया गया। आप से मिल कर आंतरिक आनंद मिला। आज आप के चेहरे की खुशी देखकर छ महीना चार्जिग मे रहेगे। अब हमे अहमदाबाद जाना है। आप को वरघोडा में जाना है। इसके पूर्व मिष्टान पकवान तैयार है। जिंदगी में आनंद है। आप यहाँ पर आये। कैसा सुख है। घुटना दर्द नही करे इसके लिये कुर्सी, खाने के लिये लड्डू है। गन्ने का रस पीने के लिये कोल्हू चालू है। तरबूच काटकर दिया जा रहा है। शेष भगवान जैसे भगवान मिले है। अब इससे अधिक क्या चाहिए ? फिर भी रोते रहते है। यह फनी बात है। जोक्स है। लेकिन हम देव के है। देव के बच्चे-बच्चियाँ है। इसका गर्व अभिमान हृद यमें रखना है। अपनी जिम्मेदारी स्वयं उठाना है। किसी तरफ अंगुली नही दिखाना है।

भुज हो, अहमदाबाद हो मूली हो, कोई भी मंदिर हो ानव मंदिर अपने ही है। देव हमारे है। कुछ भी होगा हम आधी रात को भी तैयार है। सिद्धान्त और परम्परा के आधार पर। आज गर्व है। महंत स्वामीने इस बात का प्रतिपादन किये है। श्रीवतिम् श्रीधरम्.... सहजानंद स्वामी महाराज की जय !

श्रीरामनवमी श्रीहरि जयंती समैया के यजमानश्री

श्री रामनवमी-श्रीहरि जयंती समैया श्रीहरि प्रगट्योत्सव चैत्र सुद-९ ता. १७-४-२०२४ के यजमान श्री नरनारायणदेव के खुशी हेतु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रर्णा एवम् मार्गदर्शन में प.भ.अ.नि. मीनाबेन दशरथभाई पटेल - ह. प.भ. पूरव दशरथभाई पटेल, रिन्नकी पूरव पटेल, चि ध्यान, चि. सखी आदि परिवार (चांदखेडा)

बावला श्री स्वामिनारायण मंदिर संस्कारधाम के नये मोबाईल नंबर : ७९८४७४५७१८

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट - अहमदाबाद नये मंहत स्वामी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट अहमदाबाद के नये महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी गुरु स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (अहमदाबाद कालुपुर मंदिर महंतश्री) को नियुक्त किया गया है।

•

श्री स्वामिनारायण मंदिर खाण (राज.) में नये मंहत स्वामी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर खाण (राजस्थान) (ग.गु. ब्रह्मानंद स्वामी का जन्म स्थल) के नये महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर मंदिर महंतश्री) को नियुक्त किया गया है।

सम्पत्ति - दान, भोग और नाश

- डॉ. अमरीषकुमार जी. पटेल (नवा नरोडा)

हमारे नंद संत और शास्त्र बताते है कि आप के पास जो सम्पत्ति है उसके तीन मार्ग है। दान, भोग और नाश। जो व्यक्ति दान और भोग में सम्पत्ति का सद्पयोग नही करता है - तस्य तृतिया गतिर्भवति। उसकी तिसरी गति अर्थात् लक्ष्मीजी के तीन वाहन है। (१) गरुणजी (२) हाथी (३) उल्लू गरुणजी के उपर भगवान नारायण बिराजते है। लक्ष्मीजी भी विराजति है। जिसके घर में लक्ष्मीजी सात्विक रुप में आना चाहती है तो गरुणजी के उपर बैठकर आती है। यह पैसा परिवार को आनंद देता है। संतोष देता है। और सतकर्म में देव, मंदिरो में उत्सव में, धर्मादा में अच्छे कार्यो में प्रयोग होता है। जिस घर में लक्ष्मीजी राजाकी इच्छा रखकर हाथी उपर बैठकर आती है। जिसके कारण यह धन मौज-शौक तथा भोग-विलास में खर्च होता है। इस समय यदि कोई यह बोले कि मंदिर के लिये सहायता करे तोवह कहेगा यह सब चलता रहता है। इसमें मुझे रस नही है। उसका बच्चा मौज शौक में लाखो खर्च करे तो भी उस पर प्रभाव नही पडता है। शुभ कार्य में देने से कष्ट होता है। व्यवहार में, शादी के अवसर पर फैल कर खर्च करता है। ठाकुरजी की सेवा के लिये १० रुपये दान पेटी में डालता है। ठाकुरजी के पास एक रुपया रखकर प्रार्थना करता है कि हमारे सभी कार्य पूरे कर दे। हे भगवान घर की समस्या का समाधान हो जाये। इस केस में जीत जाउ। ठाकुरजी प्रति १० रुपया का मात्र समर्पण होता है। लेकिन भगवान ऐसी चोट मारते होगे कि इसका कई दस खर्च हो जाता होगा।

जब लक्ष्मी तामस स्वरुप में आथी है। तो घर में क्लेश अर्थात् झगडा प्रारम्भ हो जाता है। कोर्ट-केस चालू हो जाता है। तथा रोग घऱ में प्रवेश कर जाता है। रोग नही मिटता है। एक के बाद एक डॉक्टर बदलते है। दवा बदलाते है। बील जारी होता है। कारण लक्ष्मी घर में तामस रुप में आयी है। सुखी नही रहेगा। किसी को सुखी भी नहि कर सकता है।

यदि हमे घऱ में सात्विक रुप वाली लक्ष्मी का निवास चाहिए तो स्वामिनारायण भगवानने उपाय बतााय है। आप अपने घर के आप का दस प्रतिशत भाग भगवान को अर्पण अवश्य करे। आप दशवा या वीसवाँ भाग जब अर्पण कर देगे तो लक्ष्मी सात्विक हो जायेगी। वह किसी दिन आप को दुखी नही करेगी। परेशान नही करेगी। आप को आनंद से जीने देगी। माँ जैसे बालक पर ध्यान देगी। क्योकि ये लक्ष्मीमाता है। यह अपना पूरा ध्यान रखेगी। यदि भगवान का हिस्सा नही निकालेगे तो ईश्वर की वसुली कडक होती है। यदि क्षमता हो तो धर्मकार्य में दान देने में कंजूसी नही करना चाहिए। नही तो ईश्वर कई बार गृहस्थ के घर में दो हाथी भेज देते है। ऐसी हाथी जो सब कुछ बाहर कर देती है। इस लिये जिसे धनवान होना हो उसे धर्मादा का दशवाँ भाग निकाले। यदि साधारण रहना है तो बीसवाँ भाग धर्मादा निकाले। जिसे दरिद्र रहना है वह इच्छानुसार दे। कलियुग में दान जैसा कोई तप नही है। जिसके पास शक्ति है। ऐसे गृहस्थो को सर्व प्रथम देव के लिये धर्मादा अवश्य निकालना चाहिए। सभी हरिभक्त देश विभाग का लेख पाँच से दश बार पढले। कालुपुर में निःशुल्क मिलता है। बिमार व्यक्ति को दवा का दान देना चाहिए। बड़े बड़े यज्ञ कराये। पारायण कराये। तीर्थो में हजार ब्राह्मणो को तथा साधुओ को भोजन कराये। इस प्रकार अपने धन की सदवृत्ति करना चाहिए। जिससे सात्विक रुप से लक्ष्मीजी का स्थायी निवास बना रहे। यह सब देव का दशांश वीसवा भाग निकाल कर करना चाहिए।

"निंदा का फल"

– गंगारामभाई एम. पटेल (प्रांतिज)

निंदा करना अष्ठारह प्रका रके व्यसनो मे एक व्यसन है। निंदा और प्रताडना दो अधम वस्तु है। स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में लिखे है कि देवता, तीर्थ, ब्राह्मण, साधु और वेद इनकी निंदा नही करते है।

महाभारत में ऐसा कहा गया है कि गृहस्थ निंदा से दूर रहे। इस लिये किसी की निंदा नही करनी चाहिए. उस गृहस्थ को यज्ञ के दशवें भाव का लाभ नही मिलता है। शास्त्र कहता है कि आप जिसकी निंदा करेगे। तो यही पाप होगा। उस में से भाग मिलेगा। आप के पुण्य धुल जाता है। इस लिये निंदा नही रकना चाहिए।

वडताल धाम से कुछ किलो मीटर की दूरी पर मेघवा नाम का एक गाँव है। वहाँ पर नरोत्तमदास तथा नागरदास करके दो पटेल रहते थे। ये दोनो पटेल भगवान के भक्तो की निंदा करते थे। चलते फिरते स्वामिनारायण भगवान के भक्तो की निंदा करते थे। प्रतिदिन प्रात: किसी भी हरिभक्त को देखते तो हल्के शब्दो से निंदाक रते थे। इस पाप से दोनो लोगो को भूत पकड लिया। जो रात-दिन दु:ख देते थे।

कोई भूत आकर सुला दे। मुझे सोना है चद्दर ओढकर सो जाता था। दो दूसरा भूत कहता कि मुझे दौडना है। इस लिये दौडने भागने लगता था। घर के लोग उसे पकडकर बैठा देते ते। कोई भूत रोने लगता था। कोई भूत खाना खानेलगता था। वह दो टोकरी भर खा जाता था। रात-दिन ये भूत परेशान करने लगे थे। भूत को भगाने के लिये ओझा-सोखा के पास गये।

ते काढवा उपाय बहु करिया,
कर्या भेला भूवाने जागरिया।
धूणी-धूणी धन गया खवाई,
तोय पेर पड्य नही कोई।

विभिन्न प्रकार के ओझा झाड-फूक करके पैसा लेकर चले जाते थे। घर के पैसे समाप्त हो गये।

मेघवा गाँव के सत्संगी को पता चला कि ये दोनो हरिभक्तो की निंदा करते थे। इस पाप से इन्हे भूत ने पकड लिया था। इस लिये हरिभक्त जाकर उनके परिवार वाले से कहा ''हमारे आराध्य देव श्री स्वामिनारायण भगवान अभी वडताल में पधारे है। तो आप नरोत्तम और नागर को वडताल ले जाओ। और स्वामिनारायण भगवान के चरणो में प्रार्थना करे। आप को कुछ नही करना पडेगा। एक पैसा भी नही देना पडेगा। कुछ कष्ट रहे तो उनसे कहना।

सत्संगि हरिभक्तो की सलाह अनुसार दोनो लोगो को पकडकर सगे वाले वडताल ले गये। महाप्रभु वडताल मंदिर एक बड़े चौक मे बिराजमान थे। संत-हरिभक्तो की संख्या अगणित थी। इसी सभा में दर्शन करते ही भूत जल गये। स्वामिनारायण भगवानने दोनो का स्वागत किये। अपने शरण में लेकर कंठी पहना दिये।

"जो कोई महाराजने परताप,
थयो भूत तेने तनताप।
न खमाणु ते निसर्या खसी,
जे रहाता ए बन्ने वसी।"

सभा में दर्शन करते ही भूत भाग गये। हरिभक्तो की निंदा करने वाले ये दोनो पटेलो का अवगुण ग्रहण नही करते हुए। स्वामिनारायण भगवान के चरण में नमस्कार करने की सलाह दिये। और परमकृपालु परमात्मा दया करके सुखी बना दिये।

परमात्मा कितने दयालु है। जय स्वामिनारायण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद के साथ पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासीज के मार्गदर्शन में बापुपुरा में कथा के अवसर पर प.भ. कांतिभाई चौधरी (पंडित) के सौजन्य से श्री स्वामिनारायण मासिक के २३ लोग आजीवन सदस्य बने थे। (भरतभाई रामाभाई चौधरी, नारायणभाई चौधरी – बालवा)

भगवद् - निष्ठा अनिवार्य

– महादेवप्रसाद जोषी (न्यु राणीप)

संसार सागर अच्छे से पार करने के लिये प्रत्येक हरिभक्त में भगवद निष्ठा अनिवार्य विषय है। अपने सम्प्रदाय में भगवान स्वामिनारायण के समकालीन समय में कई भक्तो में श्रीजी में निष्ठा प्रवर्ती थी। सम्प्रदाय के शास्त्रो में पूर्ण श्रीजी के प्रति निष्ठा रखने वाले हरिभक्तो के नाम सत्संग के समाज में ध्रुवतारा की तरह चमक रहा है।

कभी ईस्वर के निष्ठा में छोटे बडे विघ्न आते रहते है। निरंतरता होने के कारण ईश्वर अवश्य सुख प्रदान करते है। सत्संग विषयक शास्त्रो में एक प्रेरणादायी वाक्य आता है। नियम, निश्चय और पक्ष रखने वाले पर हरि अवश्य खुश होते है।

भगवत निष्ठा में दृढ प्रवृत्ति रखने में कभी हमें विचलित करने के लिये परोक्ष या अपरोक्ष प्रयास करते है। हमे उससे निराश नहीं होना चाहिए। भगवान स्वामिनारायण की भक्ति में बने रहना चाहिए। श्रीजी के बचन तथा सम्प्रदाय के शास्त्रो में आस्था रखकर अन्ततः अक्षरधाम की प्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहिए।

कई बार हमारे निष्ठा में सहजानंद स्वामी अपने आराध्यदेव परीक्षा भी लेते है। हमे श्रीजी के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। संसार के शंका-कुशंका से दूर होकर सच्चा सत्संगी बनना चाहिए। साधु संतो के सम्पर्क में रहकर सत्संग की अभिवृद्धि के साथ प्रमाणिक बनना चाहिए।

सत्संग अभिवृद्दि के कार्य के लिये हमे सभी को तन, मन और धन युक्त प्रयास करना चाहिए। स्वामिनारायण ने जो चार स्तंम्भ की रचना किये है। जो आचार्य, संत, शास्त्र और मंदिर इन चारो को हमेशा बचा के रखना है। अपना षडंगी सम्प्रदाय की नीव गहरी है। इसके लिये भगवद् निष्ठा एक अनिवार्य विषय है।

हमें अपनी भौतिक शरीर में श्रीजी की निष्ठा ठूस-ठूस कर भरना है। सत्संग के लिये जीने मरने की तैयारी होनी चाहिए। जीवन के प्रत्येक छोटे बड़े कार्यो में सहजानंद का भरोसा और निष्ठा में कमी नही आनी चाहिए।

आइये हमें भगवान स्वामिनारायण में अडिग निष्ठा की नाव के सहारे भवसार पार होने के लिये तत्पर बने रहे। सभी हरिभक्तो को जय श्री स्वामिनारायण।

પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીનો ૮૦મો પ્રાકટ્યોત્સવ તારીખ મુજબ
૧૧એપ્રિલે અંજાર (કચ્છ)મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા પ્રસંગે આપણા ભુજ મંદિરના
સંત-હરિભક્તો દ્વારા ભવ્ય રીતે ઉજવાયો અને તિથિ મુજબ ચૈત્ર વદ -૩
આપણા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં ઉજવાયો તેની બોલતી તસવીરો

કોટા (રાજસ્થાન) ના પ્રથમ પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

જેતલપુર મંદિરમાં ઠાકોરજી સમક્ષ મહાપૂજા કરતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

ગામડી મંદિરના ૧૯૫માં પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

ધરમપુર (ભૂંડિયા)મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

નિકોલ નૂતન મંદિરના ઉપલક્ષમાં આયોજીત સત્સંગ સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

અમદાવાદ મંદિરમાં દર પૂનમે યોજાતી સત્સંગ સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

અમદાવાદ મંદિરના પ્રસાદીના ચોકમાં શ્રીહનુમાન જયંતીના મારૂતિ યજ્ઞનો પ્રારંભ કરાવતા
પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી તથા પૂર્ણાહુતિ કરાવતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

શ્રી હનુમાન જયંતીના આપણા
અસારવા ગુરૂકુળમાં
વીર હનુમાનજી સમક્ષ
મારૂતિ યજ્ઞ તથા
સુંદરકાંડના પાઠનું સુંદર
આયોજન કરાયું હતું

ધરમપુર (ખાખરીયા) મંદિર
પારાયણ પ્રસંગે સભામાં
આશીર્વાદ આપતા
પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

શ્રી હનુમાન જયંતીના
નારણપુરા મંદિરમાં
શ્રી હનુમાનજીને
સુખડીનો અન્નકૂટ

અમારા (કચ્છ)મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા
પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

સુખપર રોહા (કચ્છ)મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા
પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

કલોલ મંદિરમાં રામકથા પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

કોઠંબા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા
પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

ન્યુ રાણીપ મંદિરમાં શ્રી હનુમાન જયંતી પ્રસંગે
શ્રી હનુમાન ચાલીસાની કથા પારાયણ

ગાંધીનગર સેક્ટર -૨મંદિરના રજત જયંતી મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં રાત્રી સત્સંગ સભામાં સત્સંગ કરાવતા સંતો

ધમાસણા ગામે કથા પારાયણ

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री यज्ञ पूजन की सूची - अप्रैल-२४

ता. २४-०४-२०२४ प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल – गांधीनगर – वर्त. बिन्देश जगदीशभाई पटेल।

ता. २४-०४-२०२४ प.पू. मोटा महाराजश्री के ८० वे जन्मोत्सव के अवसर पर – वर्त. श्री नरनारायणदेव महिला मंडल, अमदावाद।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची - अप्रैल-२४

ता. १३-०४-२०२४ प.भ.श्री मुकेशकुमार बलदेवभाई भक्तिदास पटेल – डांगरवावाला।

ता. १४-०४-२०२४ प.भ.श्री डॉ. उरूल्लाबेन गोपीनाथ – अमदावाद – चि. वृंदा के विवाह निमित्ते।

ता. २१-०४-२०२४ (प्रातः) प.भ.श्री जयंतीभाई एस. पटेल – विहारवाला–नारणपुरा।
(दोपहर) प.भ.श्रीमती अरूणाबेन चंद्रकांतभाई बेलाणी – नासिक।

ता. २४-०४-२०२४ प.भ.श्री अमितकुमार प्रविणभाई पटेल – कुकरवाडा।

ता. ३०-०४-२०२४ प.भ.श्री युग निकुंजभाई पटेल – नारणपुरा।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-अप्रैल-२४

रू. २,००,०००/- प.भ.श्रीमती भावनाबेन रसिकभाई टांक – अमदावाद – वर्त. रसिकभाई टांक।

रू. १,११,१११/- प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. बड़े गादीवालाश्री की प्रेरणा से पूनम मे भेट – वर्त. प.भ.श्री आदर्श भाविक संजयभाई पटेल – गाँव उनावा (रामदासबापा परिवार – श्री रामदास फाउन्टेशन – उनावा)।

रू. १,००,०००/- प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. बड़े गादीवालाश्री की प्रेरणा से – ह. प.भ.श्री आदर्श भाविक संजयभाई पटेल – गाँव उनावा. (रामदासबापा परिवार – श्री रामदास फाउन्टेशन – उनावा)।

रू. ५१,०००/- प.भ.श्री डाह्याभाई नारायणदास पटेल – माणसावाला – प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मोत्सव निमित्ते – वर्त. श्रीमती विमलाबेन पटेल।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "मूल कारण है शरीर भाव ।"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

गीताबा ने समझाया कि अक्षरधाम का सुख कैसा होता है । तो हमे यह सोचना चाहिए कि केवल ''छपैया'' जाने पर कैसी अनुभूति होती है । महाराज के जन्म स्थानप र जाने से सभी संकल्प विकल्प समाप्त हो जाते है । तो अक्षरधाम में जाने पर कैसा लगेगा ? हम सभी को महाराज द्वारा स्थापित सत्संग के माध्यम से इतना सुख प्राप्त होता है । तो भी हम दु-खी क्यो है ? हम लोग देहभाव में आ जाते है । आत्म स्वरुप में रहना नही चाहते है । इस लिये दुःखी है । संसार सम्बन्धी जो कार्य हम करते है । वह देहध्यास के कारण होता है । देह भाव के कारण विषय के प्रति प्रेम लग जाता है । और क्रोध, सम्मान, पाया, लोभ उत्पन्न हो जाता है । विषय दीमक के समान होता है । धीरे-धीरे हमे समाप्त कर देता है । यह हमें ज्ञात नही होता है । हमारी शक्तियाँ विषयो के कारण नष्ट हो जाती है । हमे विवेक एवं शांत पूर्वक सोचना चाहिए कि यह शरीर किस लिये है ? यह मानव शरीर प्रभु को प्राप्त करने के लिये मिली है । जगत की नाशवान वस्तु प्राप्त करने के लिये नही है । यह सब ज्ञान सत्संग में आने से मिलता है । सत्संग में आने के बाद सब कुछ ज्ञात होता है । कभी-कभी विवेक चूक हो जाती है । क्योकि ? मन के उपर नियंत्रण करना सबसे कठिन होता है । लेकिन यह धीरे-धीरे प्रयास से पूरा कर सकते है । उसके लिये आधार की आवश्यकता पडती है । उदाहरण के रुप में हम युद्ध कला में कितने भी निपुण हो फिर भी आप के पास अस्त्र-शस्त्र न होने पर हार निश्चित होती है । बडी से बड़ी सेना हो तब भी हथियार के विना युद्ध नही जीत सकते है । इसी प्रकार मनोनिग्रह करना, माया पर विजय प्राप्त करने के लिये महाराजने हमे शास्त्र दिये है । तो उसका उपयोग करना पडेगा । यदि उसका उपयोग नही करे तो माया उपर विजय नही हो सकती है । मन और माया के उपर विषय प्राप्त करने के लिये सबसे बड़ा साधन सत्संग है । सत्संग ''ब्रह्मास्त्र'' होता है । इसमें सब कुछ आ जाते है । इस लिये सत्संग का आधार बनाये रखे । सत्संग से विवेक पूर्वक सोचने की शक्ति मिलती है । और भगवान प्राप्ति की भूख लगती है । अपने आप मन एवम् बुद्दि से अच्छे कार्य होने लगते है । भगवान की प्राप्ति की भूख लगने पर यह शरीर उतना उस दिशा में कार्य करेगा । उदाहरण के रुप में यदि आप को प्यास लगी है तो पानी का विचार आथा है । कहाँ से पानी मिलेगा उस पर विचार करने लगेत है । दिमाग पूरा जलमय हो जाता है । पानी के प्रति विचार नही करना पडता है । कब पानी मिलेगा । हमेशा सोचते रहते है । भगवान के प्रति भूख लगने पर अंतरमन सब भगवान मय हो जाता है । सभी प्रयत्न भगवान की प्राप्ति ते लिये होता है । हम संसार के पीछे दौडते है । यह झूठी भूख होती है । यह लाभदायक नही होता है । हम दो समय भोजन करते है । यह ठीक बात है । शरीर के लिये बच्चा होता है । बीच-बीच में नास्ता करना हानिकारक होता है । आवश्यकतानुसार सब कुछ अच्छा रहता है । अधिक भूख रहना हानिकारक है । सत्संग में जाने से जगत सम्बन्धी भूख कम लगने लगती है । और पौष्टिक खुराग की भूख लगती है । जो आत्मा को स्वस्थ बनातीहै । आप की आत्मा स्वस्थ हो तो भूख जागृत होती है । धीरे-धीरे इसमें दृढता आयी है । 'आत्मा का स्वभाव उर्ध्वगती है । क्योकि ? जीवात्मा परमात्मा का अंश होता है । इस लिये स्वभावतः उपर उठता है । भगवान के प्रति खिचता है । मायाजीव को अपनी तरफ खीचती है । मन को माया का सहारा मिल जाता है । हम सत्संग का बल बढायेगे तो शीध्रता से आगे बढेगे । इसके पहले बात हुई थी ' कि मोबाईल में सत्संग सुनने से समय की

बचत हो जाती है । लेकिन भगवत प्राप्ति का समय बढ जायेगा । विदेश में रहने वाले के लिये ठीक है । लेकिन आप लोग सत्संग में प्रत्यक्ष आने का प्रयास करना चाहिए । आप गुलाब का फूल मोबाईल में देखेगे । झूम करके देखेगे तो अच्छा लगेगा । लेकिन उसमें से सुगंध नही प्राप्त होगी । नही आयेगी ? यह प्रत्यक्ष में ही आयेगी । सत्संग का अवसर कभी छोडना नही चाहिए । हम सत्संग करते है । भगवत प्राप्ति के सभी साधन है । शरीर का भाव छोडकर आत्म भाव धारण करना चाहिए । शरीर भाव से दूर होने के लिये सबसे सरल तरीका 'समर्पण' है । तन, मन और धन सब कुछ भगवान को समर्पित कर देना चाहिए । वैसे भी अपना क्या है ? साधन स्वरुप मिला है फिर उसे दे देना है । उसे अभी से दे देना चाहिए .अर्थात् मन में समर्पित हो जाना चाहिए । जैसे रखेगे वैसे रहेगे ऐसा भाव और प्रयास करना चाहिए । हमें उनके इच्छानुसार चलन ाचाहिए । यह मानव शरीर परमात्माकी दी गई अमानत है । तो शरीर का विवेक पूर्वक उपयोग करना चाहिए । अन्तरात्मा खराब करके नही रखना चाहिए । अपने पास कोई अमानत हो यदि समय से जमा नही करने पर दण्ड लग जाता है ? हम किसी का सामान माँग कर लाते है यदि क्षतिग्रस्त हो जाती है तो बदले में कुछ देना पडता है । हमे कैया जीवन मिला है । बालक पैदा होता है । तो वह स्वतंत्र खुश होता है । इसे खराब करके नही देना है । नही तो दण्ड देना पडेगा । दण्ड क्या मिलेगा ? चौरासी लाख योनियो में भ्रमण करना पडेगा । दो बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए । शरीर का भाव नही रखे और विवेक पूर्वक शरीर का उपयोग करे। अभी प्रश्न पूछ रहा था कि मंदिर आना क्यो आवश्यक है ?

मंदिर के सिंहासन में जो बिराजमान है । यही भगवान हमारे घर के सिंहासन पर विराजमान है । सब एक है । हमारे पास समय का अभाव है । मंदिर नही आये तो चलेगा ? कलियुग के कारण मन में तर्क-वितर्क चलता रहता है । इसका उत्तर यह है कि

आप को कही जाना होता है तो मनमें सोचकर वहाँ पर तुम चले जाते हो । नही जाते, उसके लिये चलना पडता है । या साधन द्वारा जाना पडता है । हमे जाना कहाँ है ? 'अक्षरधाम' भगवान तक जाने के लिये ''मंदिर पहला पडाव होता है । मंदिर पर आने के बाद सत्संग द्वारा समझते है । भगवान तक जाने के लिये किस दिशा में जाना है । कहाँ पर नही जाना है ? क्या करना है ? भजन-भक्ति कैसे करना है ? यह सब मंदिर आने पर सत्संग द्वारा ज्ञात होता है । इस लिये आगे बताये है कि सत्संग 'ब्रह्मास्त्र के समान होता है । आप स्वयं विचार करे । आप यहाँ पर बैठे है । आप की अदंर की वृत्तियाँ भगवान के लिये कैसी रही है । यदि यहाँ से निकलकर बाहर जायेगी तो कैसे वृत्ति रहेगी । स्वाभाविक है । सभी में परिवर्तन होता है । हमे माया मे रहकर माया को पार करना है । पूरा संसार माया का है । कोई यह कहे की हम माया से दूर हो गये है तो वह सम्भव नही है । मंदिर में आने पर प्रत्यक्ष सुख मिलता है । इससे बदलाव आता है । और अपनी शीध्रतासे प्रगति होती है।

•

"भगवान जो कुछ भी करते है अच्छाई के लिये"

– पटेल लाभुबेन मनुभाई (कुंडाल)

एक छोटे से गाँव में एक मात्र व्यापारी था । जिसके पास अकूत सम्पत्ति आ गयी ती । लालच को रोक नही होती है । ''लालच एक बुराई है ।'' उसने सोचा व्यापार के लिये पूँजी रखकर शेष धन को शहर के व्यापारी के पास अच्छे व्याज पर देदे । यह धन अल्प समय में बढ जायेगा । प्रातः जाने वाला था । इस लिये शायंकाल शीध्रता से सो गया । रात्रि में लघु शंका के लिये उठा तो सीढीप र सरक कर गिर गया । चोट लगी लेकिन प्राण बच गया । 'जान बची तो लाख पाये' ऐसा विचार न आकर अफसोस करने लगा । यह भगवान तो कैसे है ? ऐसा होता है ?

इसी छोटे गाँव में भगवान के एक अच्छे भक्त रहते

थे । कभी कभी सेठ की दूकान पर आते थे । भगवान के विषय पर चर्चा करते थे। इस भगत को सेठ की सूचना मिली । वह सुनते ही हाल चाल लेने चला गया । तथा आश्वासन देने गया । अपने किये गये आयोजन मे विघ्न आने की कहानी सूनाकर बोला भगवानने यह क्या कर दिया ? मैने तो कोई ऐसा कार्य तो नही किया कि यह मुझे दुख मिले ? मेरे कार्य में विघ्न आ गया ।

हरिभक्त धैर्य के साथ बोला कि ''ईश्वर जो किये है अच्छाई के लिये किये होगे ? सेठजी दुख भूल जाये । यह विश्वास रखे सब कुछ अच्छा हो जायेगा । सेठजी को ऐसा क्रोध आया कि जैसे कोई चोट पर पट्टा मार दिया हो । चोट पर नमक छिडक दिया हो । अरे भगत ! मेरी दसा और मेरा पूरा कार्य । प्रबन्ध खराब हो गया । जो कुछ होता है । अच्छे के लिये होता है । मुझे तो इसमें कुछ अच्छा नही दिखाई दे रहा है । सब कुछ खराब हो गया है । यह प्रत्यक्ष है । जो मैं अनुभव कर रहा हूँ ।

भगतने इतना ही कहा ''आप की दृष्टि केवल वर्तमान ही देख सकती है । भविष्य के गर्भ में छिपा सत्य आप नही देश कते है । इस लिये आप समझ नही रहे हो । मेरा हृदय स्वीकार कर रहा है जो कुछ हुआ है वह अच्छा ही है । भगत का दूसरा दिन गाँव से बार जाना हुआ । कुछ दिन के बाद पुनः समाचार पूछनेग या । क्रोध करेगे इस भाव को भूलकर गये ।

भगत के देखते ही सेठ भगत के पैर पर पड गया । भगत आप सत्य है । यदि मेरा पैर टूटा नही होता तो मै पैसा लेकर जाने वाला था । इस बात की सूचना चोरो को प्राप्त हो गयी थी । वे लूटकर मुझे मार डालने का आयोजन कर चुके थे । हमरा पैर टूटा लेकिन इतना बडा दुःख टल गया । वह सार्थक हो गया । आप की बात उस समय समझ नही सका था । मैं अपने स्वार्थ में आपके उपर क्रोध किया था । फिर भी भगवानने यह दण्ड क्यो दिये । मै अपना सुख देख नही पाया । मुझे नया जीवन ही नही जीवन की सत्य दृष्टि मिल गयी । जगत के नियंता ईश्वर ''जो कुछ करते है अच्छाई के लिये करते है ।'' भगवान श्रीहरि के प्रति ऐसी शरणागति का भाव दृढ आस्तिककता और समझ सभी को दे । ऐसी समझ देने वाले परम एकांतिक संतो का साथ बना रहे । ऐसी भगवान से प्रार्थना है ।

•

आराध्य देव में श्रद्धा

– हर्षाबेन शैलेषकुमार पटेल (प्रांतिज)

कडवा भगत, तुलजाराम, कला भगत

मनुऋषि अपने मनु स्मृति में कहे है कि जिसे मोक्ष चाहिए । संसार में सुखी होना है । संतोष से जीना हो, शांति पूर्वक जीवन बीते उसे एक आराध्य देव में श्रद्धा रखना चाहिए । आराध्य देव एक ही होते है । प्रणाम सभी को करे । सम्मान सबको सहारा एक का ले । जिसे अपने आराध्य पर विश्वास होता है । उसे सुख हो या दुःख हो मन गतिशील नही होता है । बिमारी होने पर दवा करायेगा । उसे ऐसा लगेगा कि भगवान की दया हट गयी है । प्रभु की कृपा से रोग दूर हो गया । भगवान की इच्छा से इतना दिन कष्ट मिला है । उनकी ईच्छा से अब स्वस्थ हो गये है ।

एक गाँव मे कडवा भगत हरिभक्त थे । नाम कडवा जाति भी कडवा पटेल थे ? लेकिन भक्त भक्त थे । उनके शरीर में कोई परेशानी भंयकर पीडा होने पर । स्वामिनारायण भगवान इनके घर गये । उनके विस्तर के पास खडे हो गये । बिस्तर पर सोये सोये कडवा भगत हाथ जोडे । महाराज सिर पर हाथ रख कर खडे थे । दर्द हो रहा था । श्रीजी महाराज उनके सामने देखं रहे थे । भगत महाराज के सामने देख रहे थे । भगवान भक्त को देख रहे थे । भक्त भगवान को निरख रहा था । थोडी देर में कडवा भगत बोलते है ''महाराज आप को ज्ञात है मेरा नाम कडवा भगत है । महाराज हँसे । भगत बोले प्रभु ! मै ऐसा नही कहूँगा कि मुझे अधिक दर्द हो रहा है । क्या आप नही जानते है । आप क्यो पीडा भेजे है ? कडवा भगत को पूर्ण विश्वास था कि दर्द देने वाले यही है । दूसरा कोई नही है । कडवा भगत जब यह बोले तब श्रीजी महारजाने कहा कि बोलो भगत चुटकी भर में दर्द समाप्त कर दू । लेकिन यह

दर्द सहन करने के लिये एक बार और जन्म लेना पडेगा। इससे अधिक पीडा दे लेकिन अब दूसरा जन्म नही चाहिए। भक्त की हिम्मत देखकर तुरंत दर्द समाप्त कर दिये।

कई भगत बोल चाल में कहते है कि कर्ता-हर्ता भगवानही है। श्रीजी महाराज जब तक कर्ता तब तक आनंद यदि वह हर्ता बनने पर लोग दुःखी होने लगते है। उस समय श्रीजी महाराज को भूल जाते है। सुख-दुःख के दाता श्रीहरि है। यह दृढ निश्चय संसार को पार कर देता है। स्वामिनारायण भगवान अपने आश्रित को कष्ट से दूर करते है। महाराज बोले है कि हमारे सत्संगी को एक बिच्छू की पीडा मिलती है तो हमे हजार गुणा दर्द होता है। लेकिन हमारे हरिभक्तो को सुखी रखो। इस लिये अपने आराध्यदेव में दृढ श्रद्धा रखे और भजन करे।

प्रांतिज शहर में तुलजाराम जेतलपुर महाराज का दर्शन करने गये। तभी महाराजने पूछा "आप कौन है ?" महाराज ! मैं ब्रह्मरुप हूँ परब्रह्म ऐसा आप का भक्त हूँ। तुलजाराम बोले ! महाराज में बोले "खडे हो जाओ और सिर रखो" तुलजाभाई निर्भय होकर बोले "हे महाराज ! जीना-मरना कुछ भी नही है। यह सब आप के हाथ की बात है। आप की ईच्छानुसार पूरा ब्रह्मांड गतिमान है। अनंत ब्रह्मांडो की उत्पत्ति, स्थिति प्रलय सब आप के ईच्छानुसार ही होता है। इस में मैं क्या हूँ ? मैं तो स्वामिनारायण भगवान का दास हूँ। स्वामिनारायण भगवान जो करे वही अच्छा है। श्रीजी महारजा तलवार फेक दिये। भक्त को भाव से आलिंगन किये। भक्त की कैसी दृढ श्रध्धा भगवान के प्रति निष्ठा।

कड़ी तालुका के कुंडाल गाँव में कला भक्तने दहकता लोहे का गेंद हाथ में लेकर खेत का चक्कर लगाये थे। उस समय आप को याद किये थे। और प्रार्थना किये कि हे दयालु ! हे प्रभु ! मुझे और कुछ नही चाहिए। मुझे इस परीक्षा में पास कर दे। "स्वामिनारायण भगवानने भगत के हृदय में प्रेरणा किये। कला भगत गर्म लोहे के गेंद को लेकर खेत का चक्कर लगाये थे। जहाँ पर गोले को रखे थे। वहाँ की घास जल गयी थी। लेकिन कला भगत के हाथ में कुछ भी नही हुआ था। स्वामिनारायण भगवान ने इस तरह कला भगत की रक्षा किये थे। उसकी खेत की रक्षा भी किये थे।

भगवान कितने भक्त वत्सल है। कैसे दयावान है। भगवान के प्रति दृढ निष्ठा होने पर काल, कर्म, माया, यम कोई प्रभावित नही कर सकता है।

चैत्र सुद-१५ ता. २३-४-२०२४ मंगलवार सत्संग सभा के वाघा तथा सोना के पद्म के यजमानश्री

श्री नरनारायणदेव के प्रसन्नता के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद एवम् पूरे धर्मकुल के खुशी से अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन में चैत्र सुद-१५ सत्संग सभा धव्जा, वाघा और सोने का पद्म के यजमान श्री अ.नि. डाहीबेन नारणभाई पटेल (पोर दश गाम गोल) प.भ. नारायणभाई त्रिकमभाई पटेल, प.भ. परेशभाई नारायणभाई पटेल, प.भ. हरिकृष्ण नारायणभाई पटेल, मीनाबेन रमेशभाई पटेल आदि परिवार।

कालुपुर मंदिर मारुतियज्ञ के यजमानश्री

चैत्र सुद-१५ ता. २३-४-२०२४ मंगलवार मारुति यज्ञ, श्री नरनारायणदेव की खुशी हेतु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से कालुपुर मंदिर में आयोजित मारुति यज्ञ के यजमान श्री अ.नि. कांताबेन चुनीलाल सोनी, परिवार (पलियडवाले राणीप) अहमदाबाद - ह. प.भ. जयेन्द्र चुनीलाल सोनी, पार्थ जयेन्द्र सोनी, मित जयेन्द्र सोनी परिवार रहा था।

सत्संग समाचार

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में रामनवमी-श्रीहरि जयंती समैया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से उसी प्रकार सम्पूर्ण धर्मकुल की खुशी से और अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से विश्व की सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ता. १७-४-२०२४ बुधवार चैत्र सुद-९ श्री रामनवमी-श्रीहरि जयंती समैया उल्लास पूर्वक मनाया गया।

सुबह ८ से ७-३० अक्षरभवन में बिराजमान बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव-महाभिषेक अन्नकूट आदि प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण हुआ। पूरे मंदिर को अद्‌भूद प्रकाश से सुशोभित किया गया था। रात्रि के समय हजारो हरिभक्त रोशनी देखने के लिये आये थे। मंदिर के प्रसादी के भव्य सभा मंडप में प्रातः ६ से ६-३० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन की शुरुआत .पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण हुआ। अहमदाबाद शहर और पास के गाँव के श्री नरनारायणदेव युवक मंडप के हरिभक्त प्रति घंटे संगीत के मधुर सुर के साथ धुन की गयी थी। अपने कालुपुर मंदिर के सभी संत धुन में रहे थे। शायं ७ बजे पू. महंत स्वामी, संत और आज की समैया अखंड धुन जन्मोत्सव आदि अवसर के यजमान अ.नि. मीनाबेन दशरथभाई पटेल - ह. प.. पूरव दशरथभाई पटेल, अ.सौ. रिन्नी पूरव पटेल चि. ध्यान, चि. सखी (चांदखेडा) आदि परिवार सम्प्रदाय के मर्यादानुसार अखंड धुन की पूर्णाहुति की आऱती में आये थे। इस पूरे अवसर पर बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री उपस्थित रहकर बहनो को अलौकिक लाभ दी थी। दोपहर १२ बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र भगवान के जन्मोत्सव की आरती उल्लासपूर्वक की गयी। रात्रि ८-३० से १०-१० बजे तक प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में अपने सम्प्रदाय के प्रसिद्ध गायक कलाकार श्री पूरव पटेल, श्री जयेशभाई सोनी औऱ साथी कलाकार द्वारा कीर्तन-भक्ति रास-गरबा लाईट शो हुआ था। अपने धर्मकुल परिवार के अत्यन्त निकट स्नेही श्री जय शाह, श्री कौशिक जैन आदि लोग दर्शन के लिये आये थे। प.पू. लालजी लालजी महाराजश्री और पू. महंत स्वामीने सभी मेहमानो को पुष्पहार पहनाकर शाल ओढाये थे। रात्रि १०-१० बजे अखिल ब्रह्मांड के अधिपति श्री घनश्याम महाराज का प्रगट्योत्सव आरती प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूरा किया गया था। प्रातः से लेकर जन्मोत्सव तक दर्शनार्थी की अधिक भीड थी। पू. महंत स्वामी और उनके संत मंडल ठंडी मठ्ठा, सुंदर फलाहार, पूरे दिन ठंडा जल आदि का भक्तो ने अच्छा प्रबन्ध किये थे। अंत में पंजीरी का प्रसाद बांटा गया था।

पूरे अवसर का संचालन कोटा मंदिर के युवक विद्वान महंतश्री और यहाँ के मंदिर के कोठारी शास्त्री स्वामी श्री नारायणमुनिदासजीने सम्भाला था। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिरमें चैत्री पूनम सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में उसी प्रकार पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में चैत्र सुद-१५ ता. २३-४-२०२४ मंगलवार के दिन पूनम के प्रसादी मंडप में पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट मंदिर) गुरु महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के वक्ता पद से प्रातः ८-३० स १०-३० बजे तक भव्य सत्संग सभा सुंदर संगीत के साथ अ.नि. डाहीबेन नारायणभाई पटेल (पोर), प.भ. नारायणभाई त्रिकमभाई पटेल परिवार के यजमान पद से (ध्वजा, वाघा, सोना का पद्म) हुई थी। हजारो हरिभक्त कथा का अमृतपान किये थे। कलोल मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजीने सुंदर लाभ दिया था। प.पू.ध.धु.

आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार तथा सभा में विराजे हुए लोगो को आशीर्वाद दिये थे ।

अंत में हजारो भक्तो ने अच्छा प्रसाद-भोजन ग्रहण किये थे । पूरे सत्संग सभा का संचालन स.गु. कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजीने शोभित किया था । (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में मारुति यज्ञ

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से इसी प्रकार यहाँ मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में श्री हनुमानजी महाराज के पूजारी पार्षद महादेव भगत के अच्छे प्रबन्ध से चैत्र सुद-१५ श्री हनुमान जयंती के अवसर पर भव्य मारुति यज्ञ प्रातः ७-३० से १२ बजे तक उल्लास पूर्वक पूर्ण किया गया था । १२ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा मारुति यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी । दादा को भव्य अन्नकूट रखा गया था । इस अवसर के यमजान अ.नि. कांताबेन चुनीलाल सोनी (पलियडवाले राणीप) परिवार ने लाभ लिया था ।(कोठारी स्वामी - कालुपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटा (राज.) एवम् विश्राम भवन का प्रथम पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीहरिकृष्णदासजी (कोटा महंतश्री) की दिव्य प्रेरणा से और पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा एवम् यहाँ मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी एवम् पूरा सत्संग समाज कोटा के अच्छे प्रबन्ध से श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटा (राज.) का प्रथम पाटोत्सव ५ अप्रैल २०२४ से ७ अप्रैल के बीच मनाया गया था ।

इस अवसर के उपलक्ष्य में स.गु. शा. स्वा. मानसप्रकाशदासजी के मधुर कंठ से अपनी मातृभाषा हिन्दी में श्रीमद् भागवत अर्न्तगत दशम स्कंध रात्रीय ज्ञानयज्ञ कथा का कोटावासी पान करके धन्य हुए थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी और पार्षद मंडल के साथ कोटा ट्रेन द्वारा पधारे थे । कोटा मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट आरती, प.पू. महाराजश्री के करमकलो द्वारा पूर्ण हुआ था । दर्शनार्थीयो को अनुसाशन सभा देखकर सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये थे। अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी एवम् संत मंडल प्रवचन दिये थे । इसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने प्रसन्नचित अवस्था में महंत स्वामी ने कोटा वासियो को आशीर्वाद दिये थे ।

पूरे अवसर पर हिन्दी भाषा में पू. स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)ने सुंदर सभापति का कार्य किये थे । धाम से संत और हरिभक्त आये थे। प्रथम पाटोत्सव था । फिर भी अच्छा प्रबन्ध किया गया था ।(कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण कष्ट भंजनदेव मंदिर न्यु राणीप श्री हनुमान जयंती के अर्न्तगत श्री हनुमान चालीसा कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा मार्गदर्शन मे अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण कष्टभंजनदेव मंदिर न्यु राणीप में ता. २३-४-२०२४ मंगलवार चैत्र सुद-१५ को श्री हनुमान जयंती महोत्सव के अर्न्तगत श्री हनुमान चालीसा कथा ता. १८-४-२०२४ से २२-४-२०२४ तक सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्ता पद से हजारो भाविक कथा प्रेमीओने श्रवण किया था । पूरा प्रबन्ध कोठारीश्री, ट्रस्टी मंडल, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा पूरा सत्संग समाज न्यु राणीप द्वारा पूर्ण हुआ । कथा के मुख्य यजमान प.भ. पटेल पुरुषोत्तमभाई त्रिभुवनदास भावपुरा, ह. के.पी. घनश्यामभाई पिन्टुभाई, पटेल प्रवीणभाई नटवरभाई सेडला वेदांत - वास्वी आदि परिवारने लाभ लिया था । अनेक हरिभक्त यजमान बनकर लाभ लिये थे ।

कथा के अवसर पर धाम से संत, सांख्ययोगी माताये आई थी । सम्पूर्ण प्रसंग का संचालन सगु. महंत शास्त्री स्वामीश्री व्रजभूषणदासजीने किया था । (महंत शा. स्वा. व्रजभूषणदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर १९८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से जेतलपुर धाम में बिराजमान महाप्रतापी श्री रेवतीजी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १९८ वाँ पाटोत्सव फाल्गुन वद-८ ता. २-४-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा प्रात) ६-३० से ७ बजे षोडशोपचार महाभिषेक वेदविधिपूर्ण रुप से किया गया । जेतलपुर का महाप्रसादीभूत देव तालाब का सरकार द्वारा सुंदरीकरण करने के लिये प.पू. महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूजा विधि पूर्वक की गयी थी ।

प्रसंगोचित सभा में पाटोत्सव के यजमान अ.नि. चिमनभाई जीवाभाई पटेल परिवार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सम्मान करके आशीर्वाद दिये थे ।पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीहरियज्ञ सत्संग सभा, अन्नकूट महाभिषेक, ध्वजारोहण आदि भव्य कार्यक्रम किया गया था । संत हरिभक्त अधिक संख्या में पधारे थे। पूरे प्रसंग का संचालन स.गु. महंत शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (बावला)ने किया था ।(महंतश्री के.पी. स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडीका १९५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासज्री तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से स.गु. आनंदानंद स्वामी द्वारा बनाये गये गामडी गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयो का) १९५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव तथा बहनो के मंदिर का ६ ठ्ठा पाटोत्सव ता. २९-४-२०२४ से १-५-२०२४ तक उल्लासपूर्वक मनाया गया । और इस अवसर पर स.गु. महंत शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (बावला महंतश्री) ने वक्तापद से चिन्हचिंतामणी रात्रिय कथा पारायण में हजारो कथा प्रेमीजन कथामृत का लाभ उठाये थे।

गामडी गाँव के श्रद्धालु धर्मप्रेमी लोगोने यजमान बनकर सुंदर लाभ लिये थे । ता. १-५-२४ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारकर उनके हाथो द्वारा ठाकुरजी का षोडषोपचार अभिषेक अन्नकूट आरती उतारकर सभा में विराजमान होकर यजमान परिवार तथा गाँव वालो को आशीर्वाद दिये थे। संहिता पाठ में स्वामी जनमंगलदासजी (जेत.) पधारे थे । सभा का संचालन स.गु. ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (कालुपुर ट्रस्टीश्री)ने किया था ।(महंत के.पी. स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी (बहनोका) २५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सां. शांताबा, सां. हंसाबा, सां. रंजनबा की प्रेरणा से तथा पू. स.गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी (मूली) के सुंदर मार्गदर्शन से पाटडी बहनो के मंदिर का २५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. १६-२-२४ से ता. २२-२-२४ के बीच उल्लासपूर्वक मनाया गया था ।रजत जयंती केउपलक्ष्य में ४० जितने गाँवो की बहने पधारकर लगातार २५ दिन तक १२ घंटे की महाधुन करती थी।

श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण सम्प्रदाय के प्रसिद्ध विद्वान कथाकार पू. श्रीजी स्वामी के वक्ता पद से संगीत युक्त स्वरो में की गयी थी । ता. १९-२-२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री आयी थी । प.पू. महाराजश्री ने ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में बैठे सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे। प.पू. गादीवालाश्री बहनो के उपर खुश होकर आशीर्वाद दी थी।

इस अवसर पर धामोधाम से संत सां.योगी माताये अधिक संख्या में पधारी थी । (कोठारी स्वामी मंदिर पाटडी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी) श्रीराम कथा

श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी गुरुप्रसाददासजी की प्रेरणा से और स.गु. शा. आनंदप्रकाशदासजी सभी सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर पंचवटी कलोल के सुंदर प्रबन्ध से श्रीराम जन्मोत्सव श्री घनश्याम जन्मोत्सव, श्री हनुमानजी जन्मोत्सव के अर्न्तगत १७-४-२४ से २३-४-२४ तक स.गु.

शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्ताप द से संगीतमय वातावरणमें पूर्ण हुआ था।

इस अवसर का संचालन स.गु. शा. स्वा. उत्तमचरणदासजी और शा. स्वा. गोपालचरणदासजी (कलोल) ने किया था।

शा. स्वा. भक्तिकिशोरदासजी संहिता पाठ में बिराजे थे। संत और हरिभक्त धाम से आये थे। कई हरिभक्त यजमान बनकर लाभ उठाये थे।(कोठारीश्री कलोल पंचवटी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा २४३ वाँ श्री घनश्याम जन्मोत्सव मनाया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा समस्त सत्संग समाज नारणपुराधाम के सुंदर आयोजन से यहाँ नारणपुरा मंदिर में रामनवमी श्रीहरि प्रगट्योत्सव ता. १७-४-२०२४ को श्री घनश्याम महाराज के सामने शायं ४ से ८ बजे तक साटा का अन्नकूट दर्शन का कार्यक्रम था। साथ में श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक वेद-विधान से पूर्ण किया गया था।

भव्य मारुति यज्ञ : ता. २३-४-२०२४ मंगलवार को चैत्र पूर्णिमा को नारणपुरा मंदिर में भव्य मारुति यज्ञ किया गया था। शायं ४ से ७ बजे तक सुखडी का अन्नकूट दर्शन शायं ६ बजे तक चला था। नारणपुरा क्षेत्र के धर्मप्रेमी लोग दर्शन करके धन्य हुए। (पार्षद कृष्णा भगत - नारणपुरा मंदिर)

नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर अलीणा मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव के अर्न्तगत श्रीमद् भागवत दसम स्कंध का पारायण

परकमृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से एवम् अ.नि. स.गु. भंडारदादाश्री जानकीवल्लभदासजी स्वामी (पोरडा) के दिव्य आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी श्री धर्मस्वरुपदासजी एवम् पूर्ण सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर अलीणा (ता. महुधा जि. खेडा) के अच्छे प्रबन्ध से ता. ४-४-२४ से ६-४-२४ तक अलीणा नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव के अर्न्तग श्रीमद् भागवत दशम क्कंध कथा सम्प्रदाय के विद्वान कथाकार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) के वक्ता पद से पूर्ण हुआ था।

ता. ६-४-२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा नूतन भव्य मंदिर में सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की प्राण प्रतिष्ठा अच्छे से पूर्ण की गयी।

इसके बाद अवसरोचित सभा में मंदिर निर्माण कर्ता पू. धर्मस्वरुप स्वामी और सेवा देने वाले सभी हरिभक्तो को प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये। यहाँ तथा विदेश में रहने वाले सभी हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा दिये। श्रीहरि की कृपा प्राप्त किये।(शा.स्वा. वासुदेवचरणदास - पोरडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२, गांधीगनर (रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में योजित अनेक प्रवृत्तियाँ

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२, गांधीनगर वर्ष २०२४ को २५ वर्ष पूर्ण होने जा रहा है। इस समय प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा पूरा धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से और गांधीनगर मंदिर के महंतश्री व्रजभूषणदासजी के मार्गदर्शन में धार्मिक तथा अन्य प्रकार की सामाजिक प्रवृत्तियाँ पूरे वर्ष तक चली है। इसकी थोडी झलक नीचे बताई जा रही है।

(१) स्वामिनारायण महामंत्र लेखन, व्यक्तिगत भजन, भक्ति के नियम, भक्ति भाव से चालू है।

(२) पूरे वर्ष गांधीगनर में अलग-अलग क्षेत्रो में (कीर्तन-भक्ति) २१ सभा ये पूर्ण हुई है। वर्तमान में अप्रैल २०२४ कीर्तन सभा १७ से २१ तक किया गया। प्रत्येक सभा में औसत ३०० से ४०० हरिभक्त भाग लिये। २२ और २५ को पुनःकीर्तन सभा का आयोजन किया जायेगा।

(३) ता. १४-४-२०२४ रविवार के दिन 'सफाई अभियान' के अर्न्तगत श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ संकुल में जोर-शोर से सफाई सेवा हरिभक्त किये। पूरे दिन ५० हरिभक्त सेवा दिये थे।

(४) 'कैन्सर जागृति अभियान' कैन्सर हास्पिटल अहमदाबाद के सहयोग से ता. ६-१-२०२४ के दिन अपने ''कैन्सर जागृति अभियान'' का कैम्प किया गया था। कैम्प में १०० बहनो का निरीक्षण किया गया था। महिलाये कैन्सर

की जागृति रखे। इस पर विशेष ध्यान दिया गया था। इस में दो बहनो को कैन्सर के लक्षण मिले थे । इसकी दवा तथा देखरेख मंदिर के तरफ से की जा रही है।

(५) ''फीजियोथेरैपी कैम्प'' अपने हरिभक्त डॉ. सुनीलभाई पटेल द्वारा ''हेल्थ फोकस फिजियोथेरैपी केन्द्र'' के अर्न्तगत ता. ७-४-२०२४ के दिन इसका कैम्प किया गया था। इसमें १२५ लोग लाभ लिये थे। उन्हे कसरत, समझ दी गयी थी।

(६) ''आयुर्वेदिक निदान कैम्प'' श्रीहरि आयुर्वेद आश्रम के वैद्य समीरभाई वी. दवे द्वारा मंदिर में ता. २८-४-२०२४ रविवार के दिन कैम्प किया गया था। १५० लोगो की समस्या का निदान किया गया था। दवाये तथा सलाह मुफ्त में दी गयी थी। डॉ. समीरभाई पूरा मार्ग दर्शन दिये थे।

(७) ''प्रथम सत्संग सभा'' ता. २७-४-२०२४ शनिवार को रायसण, रांदेसण, धोलाकुवाँ, पीडी.पी.यू. और कोबा के स्थानिक हरिभक्त सर्व प्रथम सत्संग सभा का रात्रि ९ से १०३० तक किया गया था। श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद के महंतश्री पुरुषोत्तमप्रकासदासजी तथा संत सभा में पधारकर भक्ति का लाभ दिये थे । ३५० हरिभक्तोने लाभ लिया था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर रजत जयंती महोत्सव के अर्न्तगत किया कलाप मे वरिष्ठ नागरिक मंडल, युवक मंडल, महिला मंडल के सभी सदस्यो ने तन, मन, धन से उत्साह पूर्वक सेवा दिये थे । पूरे प्रवृत्ति में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के महंत स्वामी पूज्य पी.पी. स्वामी उपस्थित थे । और मार्गदर्शन दिये थे । (विपीनभाई पटेल से-२, गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी का ६ वाँ पाटोत्सव के अवसर पर श्रीमद् भागवत पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. स्वामी स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी सत्संग समाज श्री नरनारायणदेव युवक मडंल के अच्छे प्रबन्ध से ता. २९-४-२०४ से ५-५-२०२४ तक हर्षद कोलोनी के ६ वे पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत रात्रीय सप्ताह पारायण स.गु. शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारणघाट मंदिर महंतश्री) के वक्ता पद से पूर्ण की गयी।

इस अवसर पर समूह महापूजा, अन्नकूट, श्री कृष्ण जन्मोत्सव, रुक्मणी विवाह आदि कार्यक्रम हुआ । ता. ५-५-२०२४ को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । सभी सेवा देने वाले भक्तो को आशीर्वाद दिये थे । बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आयी थी। संतो ने अमृतवाणी का लाभ उठाये थे। सभा का संचालन पू. शास्त्री स्वामी व्रजवल्लभदासजी ने शोभा बढाये थे । (गांधीनगर से-२)(कोठारीश्री हर्षदकोलोनी मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा का १२४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा का १२४ वाँ पाटोत्सव ता. ३-४-२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करमकलो द्वारा पूरा हुआ था । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्री यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये।(कोठारी कनुभाई पटेल, घनश्यामभाई पटेल - काशीन्द्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर का १८३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से बालासिनोर सत्संग समाज और कोठारीश्री के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयोका) बालासिनोर का १८३ वाँ पाटोत्सव एवम् बहनो के मंदिर का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ४-४-२४ से ६-४-२४ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित चिन्ह चिंतामणी त्रिदिनात्मक पारायण स.गु. शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (बावला महंतश्री) के वक्तापद से उल्लास पूर्वक मनाया गया था। गाँव के सभी हरिभक्त सुंदर प्रबन्ध किये थे। सभा का संचालन महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजीने (नारणपुरा-मथुरा) किया था।(कोठारीश्री बालासिनोर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदखेडा का ६२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल

के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प.भ. अमृतलाल मरघाभाई पटेल परिवार चांदखेडा सत्संग समाज ने अच्छा प्रबन्ध किये थे । श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदखेडा का ६२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण ता. २६-२-२४ से ३०-४-२४ तक रात्रि के स.गु. महंत शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल मंदिर) के वक्ता पदे से पूर्ण की गयी । संत लोग धामो से आये थे । सभाक ा सुंदर संचालन महंत शा. स्वामी देवप्रकाशदासजी (उनावा) ने किया था । कथा के मध् यमें आने वाले प्रसंगो को उल्लासपूर्वक मनाया गया था । (कोठारीश्री चांदखेडा)

धरमपुर (खाकरिया) श्रीमद् भागवत दशम स्कंध सप्ताह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. स.गु. स्वामी श्रीहरिदासजी, अ.नि. स.गु. स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा स.गु. शा.स्वा. आनंदप्रियदासजी और बालकृष्ण स्वामी के सुंदर मार्गदर्शन में श्री धरमपुर गाँव में समस्त सत्संगी समाज ने अच्छी व्यवस्था की थी । ता. २३-४-२४ से २७-४-२४ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कंध पंचान्ह रात्रीय पारायण शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी के वक्ता पद से की गई थी ।

इस उत्सव के अवसर पर प.भ. बाबुलाल करशन पटेल परिवार कथा के मुख्य यजमान का लाभ उठाये थे । गाँव के सभी हरिभक्त तन, मन एवम् धन से पूर्ण सहयोग दिये थे ।

ता. २७-४-२४ को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । सभी भक्तो को खुश होकर आशीर्वाद दिये थे । बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पधारी थी ।(कोठारीश्री धरमपुर मंदिर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

छत्रीयाणा गाँव में (ता. चूडा) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वामी भक्तिनंदनदासजी (मूली) की प्रेरणा से मूली प्रदेश के छत्रीयाणा गाँव में (ता. चूडा) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया ।

इस प्रसंग पर ता. १२-४-२४ से १८-४-२४ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद से पूर्ण हुई ।

ता. १८-४-२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा वेदोक्त विधि से पूर्ण की गयी । इसके बाद यज्ञ तथा कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभा में विराजकर सभी को आशीर्वाद दिये ।

इस अवसर पर बहनो को दर्शन देने के लिये समस्त बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री आनेवाली थी । लेकिन स्वास्थ्य ठीक नही होने के कारण नही पधारी । स्पेश्यल प्रोग्राम करके पधारेगी । यह प.पू. महाराजश्री विशेषकर बोले थे । इस प्रसंग मे गाँव के सभी हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा दिये थे । मूली से पू. कृष्णवल्लभ स्वामी, स्वामी धर्मवल्लभदासजी, पूजारी प्रेमवल्लभ स्वामी संत आदि पधारे थे ।

प.भ. मावजी भगत (यात्रावाले) सुंदर प्रेरणारुप सेवा दिये थे।(प्रति. अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर, लूइसविल, कंटकी, यु.एस.ए. श्रीमद् रामचरित्र मानस कथा

परकमृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से उसी प्रकार पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा से सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी के मार्गद्रशन और वक्ता पद से ''श्रीमद् रामचरित्र मानस'' कथा पूर्ण हुई । पू. स्वामी अपनी अच्छी शैली में पांच-पांच दिन तक लूईसविल और आस-पास के शहर से अधिक संख्या में पधारे हरिभक्त कथा का रसपान किये थे । कथा के मध्य आने वाले प्रसंग 'शिव-पार्वती विवाह' की उल्लासपूर्वक मनाया गया था । कथा में आई.एस.एस.ओ. के दूसरे मंदिर से पधारे संतो ने आशीर्वाद दिये थे । कथा का आयोजन एवम् संचालन निज मंदिर के पू. महंत पार्षद वर्य महेन्द्र भगत अच्छे रुप से किये थे ।(रमेशभाई जी पटेल - लूईसविल)

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

फागण सुद-१ प.भ. अ.नि. जसुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट, प.भ. अ.नि. भास्करभाई ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. नगीनभाई हरजीवनदास शेठ (बावला), प.भ.अ.नि. वर्षाबेन नवीनचंद्र पाठकना स्मरणार्थे (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. विश्राम देवजी पिंडोरीया (सरली-कच्छ)। **फागण सुद-२/३** प.भ. अ.नि. जसुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट, अ.नि. भास्करभाई ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद)। **फागण सुद-४** प.भ. रोनक भीखाभाई पटेल (धमासणा), प.भ. अश्विनभाई पी. शिरोया (अहमदाबाद), प.भ. चांदनीबेन तथा ईलाबेन (करीयाणा)। **फागण सुद-५** प.भ. अ.नि. लालजी करशन हिराणी (मिरझापर-कच्छ), प.भ. नरसिंहभाई आंबाभाई हिरपरा (सुरत), प.भ. पायल तथा जयेश हिराणी (भुच-कच्छ)। **फागण सुद-६** प.भ. शिवजी लालजी हिराणी (फोटडी-कच्छ)। **फागण सुद-७** प.भ. उर्विस नरेशकुमार भावसार (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. भोलाभाई मगनभाई (अहमदाबाद)। **फागण सुद-८** प.भ. अ.नि. जसुभाई रावजीभाई अमीन (दहेगामवाला), प.भ. रोहितभाई प्रहलादभाई पटेल (भाउपुरा), प.भ. कार्तिज अंबालालभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भानुभाई वेलजीभाई टांक (राजकोट)। **फागण सुद-९** प.भ. पटेल ज्योत्सनाबेन भीखाभाई (वडु), प.भ. मनीषाबेन रमणभाई पटेल (अहमदाबाद)। **फागण सुद--१०** प.भ. सौरभ महेशभाई पटेल (लालोडा)। **फागण सुद-११** प.भ. रावजी जी. हालाई (कुंदनपर-कच्छ)। **फागण सुद-१२** प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), श्री घनश्याम युवक मंडल (अहमदाबाद), प.भ. दुधात बावचंदभाई देवजीभाई (अहमदाबाद), प.भ. कृष्णकुमार वाडीलाल पटेल (संतरामपुर), प.भ. सुनीलभाई ईश्वरभाई पटेल (राणीप), प.भ. मनजी विश्राम वरसाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. ध.प. केशरबेन, नारणभाई, कांतिभाई, प.भ. मोनाबेन नवीनचंद्र पटेल (अहमदाबाद)। **फागण सुद-१३** हरिॐ चिंतनभाई शाह)मुंबई), प.भ. अ.नि. आनंदप्रसाद छोटालाल राव (अहमदाबाद), प.भ. टिंकलबेन राजेन्द्रकुमार पटेल (गोता), प.भ. नटवरभाई गिरधरभाई पटेल (विसतपुरा)। **फागण सुद-१४** प.भ. नयनाबेन राजेन्द्रभाई भावसार (पेथापुर), प.भ. जगदीशचंद्र रतिलाल पटेल (धरमपुर), प.भ. अ.नि. मावजीभाई के. पटेल (नेत्रा-कच्छ), प.भ. लक्ष्मणभाई (कडी)। **फागण सुद-१५** प.भ. डेनी अंबालाल पटेल (पलीयड), प.भ. वैदेहीबेन पार्थभाई त्रिवेदी (पर्थ), प.भ. शक्ति पटेल - प्रगतिबेन महेन्द्रभाई (अहमदाबाद), प.भ. वनीषाबेन कांतिभाई हालाई (केरा-कच्छ), प.भ. अ.नि. शकुंतलाबेन बंसीलाल पटेल (मेतपुर), प.भ. मंजुरीबेन सोनी (मुंबई), प.भ. मंजुलाबेन विक्रमभाई पटेल (झुंडाल)।

फागण वद-१ प.भ. अ.नि. हिरबाई शिवजी वसाणी (कोडकी-कच्छ), प.भ. कल्पना रमेशचंद्र भट्ट (अहमदाबाद)। **फागण वद-२** प.भ. अ.नि. नारण लालजी हालाई (कोडकी-कच्छ), प.भ. अ.नि. मगनभाई वी. पटेल (धंधुका). प.भ. उषाबेन प्रकाशभाई पटेल (अहमदाबाद)। **फागण वद-३** प.भ. वनिताबेन जीतेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद)। **फागण वद-४** प.भ. गोविंद कानजी हिराणी (कोडकी-कच्छ), प.भ. शारदाबेन पोपटलाल पटेल (उंझा), प.भ. आशिषभाई - निषितभाई ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद), प.भ. मंजुलाबेन विष्णुभाई पटेल (उंझा), प.भ. रूपेशभाई रमेशभाई जोगाणी (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. सुभद्राबेन ए. पटेल (अहमदाबाद)। **फागण वद-५** प.भ. अ.नि. प्रेमजी हरजी केराई (कोडकी-कच्छ)। **फागण वद-६** मरतोली गाम पगपाला संघ, प.भ. अ.नि. कमुबेन त्रिकमभाई पटेल (वडु), प.भ. कोकीलाबेन जयंतीलाल पटेल (डांगरवा), प.भ. आयुष पंकजभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. प्रकाशभाई केशवभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. डॉ. पार्थ गीरीशभाई पटेल (लवारपुर), प.भ. अ.नि. राधाबाई हरजीभाई वरसाणी (भारासर-कच्छ)। **फागण वद-७** प.भ. अ.नि. वेलबाई हरजी वरसाणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. रमेशचंद्र रणछोडलाल पटेल (डिंगुचा)। **फागण वद-८** प.भ. शिवजी रत्ना पाधरा (सुखपर-कच्छ), प.भ. कौशिकाबेन तथा हरेशकुमार शाह (अहमदाबाद)। **फागण वद-९** प.भ. अ.नि. रत्ना हरजी पाधरा (सुखपर-कच्छ). **फागण वद-१०** प.भ. श्रेय दर्शन पटेल (अहमदाबाद), प.भ. किनलबेन अश्विनभाई पीपलवा (राजकोट)। **फागण वद-१२** प.भ. अ.नि. शिवजी देवजी हिराणी (मांडवी-गोधरा-कच्छ), प.भ. अ.नि. प्रभुदास कुवरजीभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई मोरचंददास पटेल (डांगरवा), प.भ. शैलेषभाई बी. भावसार (अहमदाबाद), प.भ. निलेशभाई महादेवभाई पटेल (गोता), प.भ. अ.नि. सोमीबेन पी. भावसार (वडनगर) **फागण वद-१३/१४** प.भ. डॉ. गर्ग भोगीलाल शुकल (अहमदाबाद), प.भ. अशोकभाई पी. प्रजापति (गांधीनगर), प.भ. जयंतिलाल चुनीलाल पंचाल (अहमदाबाद), प.भ. तुलसीबेन नरसीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. वेलजी विश्राम (केरा-कच्छ)। **फागण वद-३०** प.भ. गोपालभाई रवजीभाई वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. अ.नि. सुशीलाबेन भरतभाई पटेल (डांगरवा), प.भ. अ.नि. नारण भीमजी केराई (नारणपर-कच्छ), प.भ. अ.नि. कानबाई विरजीभाई हिराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. उमंग भीमजी करशनभाई जेसाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. गीरीशभाई पटेल (अहमदाबाद)।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

छत्रीयाला (मूली प्रदेश) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

अलीणा (महुधा) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

वेकरा (कच्छ) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर
ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

सुरजपुर (कच्छ) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर
पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री के
साथ भुज मंदिर के संत मंडल ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

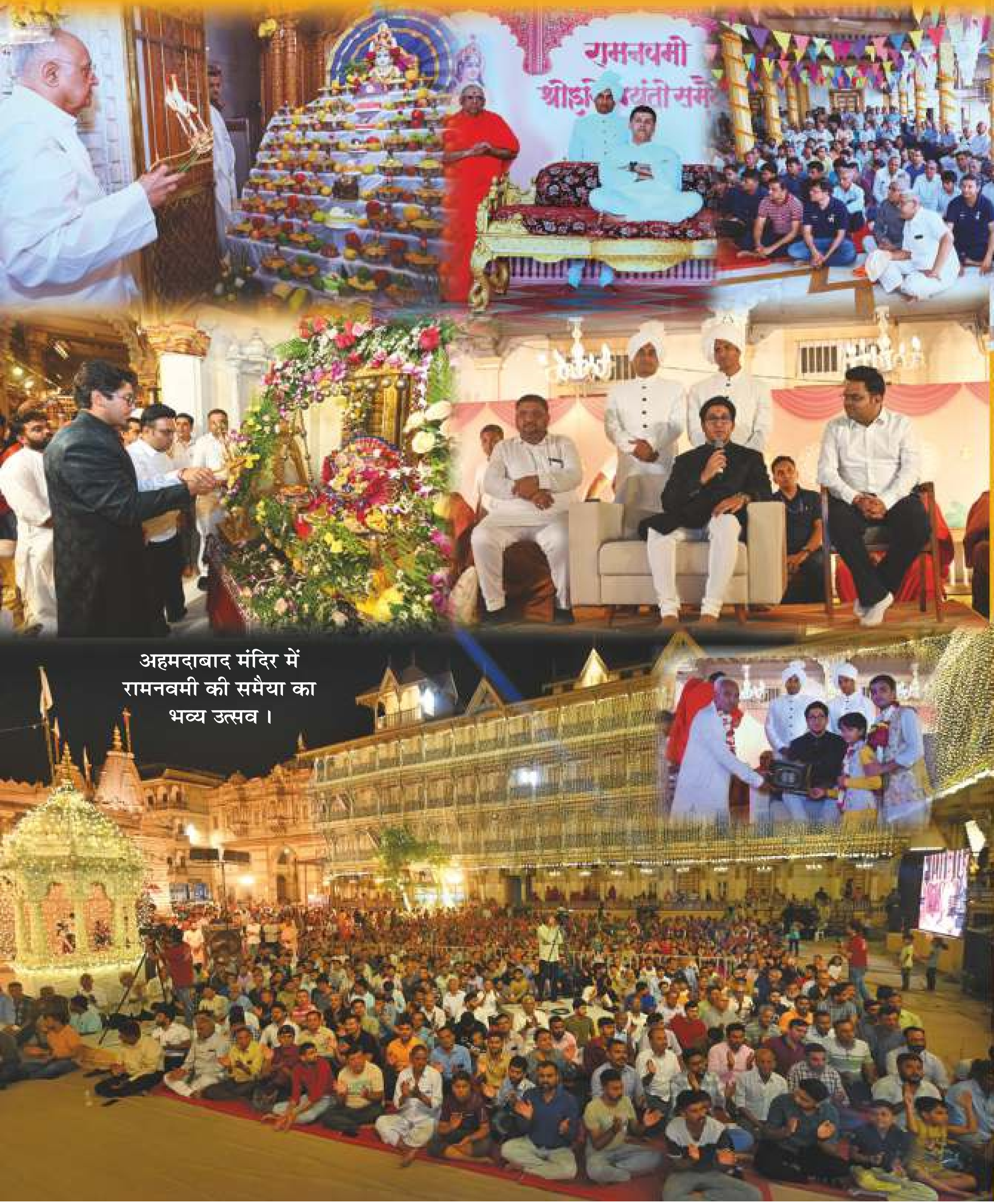

अहमदाबाद मंदिर में
रामनवमी की समैया का
भव्य उत्सव ।